(स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं निर्भीक राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र)

हिन्दी दैनिक

बुद्ध का संदेश

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

शुक्रवार, 01 अप्रैल 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 102 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/—रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड—133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

तापसी पन्नू की मिशन इम्पॉसिबल...8

सबसे शक्तिशाली लोगों की लिस्ट में टॉप पर पीएम मोदी, योगी के ग्राफ में बड़ा इजाफा, जानिए राहुल का क्या है हाल?

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारतीय राजनीति और वैश्वक कूटनीति का एक ऐसा नाम है जिसका डंका दुनियाभर की चौपालों पर बज रहा है। पीएम मोदी की लोकप्रियता में लगातार इजाफा हो रहा है और वो देश के 100 सबसे शक्तिशाली लोगों की सूची में पहले स्थान पर काबिज हैं। इसके अलावा इस सूची में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, संघ प्रमुख मोहन भागवत, बीजेपी चीफ जेपी नड्डा व सपा प्रमुख अखिलेश यादव का नाम भी शामिल है। 100 पॉवरफुल लोगों की सूची इंडियन एक्सप्रेस ने जारी की है। मोदी की लोकप्रियता में लगातार इजाफा : पीएम मोदी के आलोचकों का मानना था

कि कोरोना महामारी, कृषि कानूनों को वापस लेने से उनकी छवि धूमिल हुई है। लेकिन ये सारे दावे हवा हवाई साबित हुए हैं। पीएम के रूप में पिछले आठ साल से मोदी एक नियमितता के साथ बने हुए हैं जो उनकी उपस्थिति का विस्तार करते हैं और उनके आलोचकों के मुंह पर करारा तमाचा भी है। कोरोना की दूसरी लहर के बाद टीकाकरण कार्यक्रम हो या, हाल ही में यूरोप से 22,000 से अधिक युवा भारतीयों को एयरलिफ्ट करने का मामला हर मोर्चे पर प्रधानमंत्री सच्चे प्रधान प्रस्तावक के रूप में खड़े हुए हैं। योगी के ग्राफ में बड़ा इजाफा : पीएम मोदी के बाद इस सूची में दूसरे नंबर पर अमित शाह, तीसरे नंबर पर मोहन भागवत, चौथे पर जेपी नड्डा, पांचवें पर मुकेश अंबानी और छठे नंबर पर योगी आदित्यनाथ हैं। सत्ता का रास्ता लखनऊ से होकर गुजरता है और इसके साथ पावर लिस्ट 2022 को पक्का किया गया है। पिछले साल के 13वें नंबर से योगी आदित्यनाथ छठे नंबर पर पहुंच गए हैं। इसके अलावा इस सूची में सातवें नंबर पर गौतम अडानी, आठवें पर अजित डोभाल, नौवें पर केजरीवाल, दसवें पर निर्मला सीतारमण हैं। इस लिस्ट में राहुल गांधी 51वें नंबर पर हैं।

केजरीवाल के आवास के बाहर तोड़फोड़ करने के आरोप में 8 गिरफ्तार, आप ने की एसआईटी जांच की मांग

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने गुरुवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पर तोड़फोड़ की घटना के आरोप में आठ लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस कुछ और लोगों की तलाश कर रही है। पड़ताल के लिए पुलिस की छह टीमें छापेमारी में लगी हैं। आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक सौरभ भारद्वाज ने 30 मार्च को सीएम अरविंद केजरीवाल के आधिकारिक आवास पर कथित हमले और तोड़फोड़ के खिलाफ दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख किया था। जिसके बाद पुलिस एक्शन में आयी थी। सौरभ भारद्वाज की याचिका में हमले और इसके अपराधियों के संबंध में एक स्वतंत्र, निष्पक्ष और समयबद्ध आपराधिक जांच करने के लिए एक विशेष

जांच दल (एसआईटी) के गठन की मांग की गई है। सौरभ भारद्वाज ने अपनी याचिका में भाजपा कार्यकर्ताओं पर हमले को अंजाम देने का आरोप लगाया है। याचिका में कहा गया है, ष्ऐसा लगता है कि दिल्ली पुलिस की मौन मिलीभगत से इसे अंजाम दिया गया।ष फिलहाल याचिका दायर करने की प्रक्रिया चल रही है। यह बताया गया है कि सीएम के घर के आसपास के सीसीटीवी कैमरे टूट गए, और सीएम के घर के चारों ओर सुरक्षा अवरोध टूट गया। दिल्ली विधानसभा में अपने भाषण में, केजरीवाल ने द कश्मीर फाइल्स को बढ़ावा देने के लिए भाजपा पर निशाना साधा था। जिसके बाद उनका लोगों ने काफी विरोध किया था। केजरीवाल की जान को खतरा?: सीएम आवास पर हमले के बाद, दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भाजपा पर ष्अरविंद केजरीवाल को मारने की साजिशष करने का आरोप लगाया। आप के एक अन्य नेता सौरभ भारद्वाज ने भी दावा किया कि भाजपा सीएम अरविंद केजरीवाल की ष्हत्याष करने की कोशिश कर रही है। बीजेपी चाहती है केजरीवाल माफी मांगें: भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कार्यकर्ताओं ने केजरीवाल के आवास में तोड़फोड़ की। भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या ने अपने बयान के लिए कार्यकर्ताओं के एक समूह का नेतृत्व केजरीवाल के आवास के सामने किया, जहां उन्होंने कथित तौर पर कश्मीरी पंडितों के नरसंहार को झूठा करार दिया। भाजपा युवा मोर्चा ने कश्मीर हिंदुओं के नरसंहार के लिए दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल के उपहास के खिलाफ प्रदर्शन किया। युवा मोर्चा ने केजरीवाल से बिना शर्त माफी की मांग की। युवा मोर्चा का विरोध तब तक जारी रहेगा जब तक वे माफी नहीं मांग लेते। राम मंदिर का मजाक बनाना, हिंदू देवी—देवताओं का मजाक उड़ाना, बटला हाउस पर सवाल उठाना, सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल उठाना आम आदमी पार्टी की नीति रही है।

सीएम सरमा ने दिए संकेत, छिन सकता है मुसलमानों से अल्पसंख्यक का दर्जा

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि राज्य सरकार धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय को जिलेवार परिभाषित करने की वकालत करती है। सरमा ने कहा कि राज्य दिल्ली भाजपा नेता अश्विनी कुमार उपाध्याय द्वारा राज्य स्तर पर

अल्पसंख्यकों की पहचान करने के लिए दिशा—निर्देश तैयार करने के निर्देश की मांग करने वाली जनहित याचिका के आधार पर चल रहे सुप्रीम कोर्ट के मामले में पक्षकार बनने की कोशिश करेगा। इस मामले में केंद्र ने हाल ही में शीर्ष अदालत के समक्ष प्रस्तुत किया है कि राज्य हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा देने पर विचार कर सकते हैं यदि समुदाय उनके अधिकार क्षेत्र में बहुसंख्यक नहीं है। 2011 की अंतिम जनगणना के अनुसार असम की अल्पसंख्यक मुस्लिम आबादी 33: से थोड़ा अधिक है। लेकिन, राज्य के भीतर नौ जिले हैं जहां मुसलमान बहुसंख्यक हैं और हिंदू अल्पसंख्यक हैं जैसे ईसाई, सिख, बौद्ध और जैन। उन्होंने कहा, षपिछले 75 वर्षों से एक अवधारणा है कि अल्पसंख्यक का मतलब मुसलमान है, लेकिन अब यह अवधारणा चुनौती में आ गई है और यह बताया गया है कि हिंदुओं को भी उनके धर्म के लिए खतरे की धारणा के आधार पर एक विशेष राज्य में अल्पसंख्यक के रूप में मान्यता दी जा सकती है। उदाहरण के लिए असम के संदर्भ में, दक्षिण सलमारा जिले में हिंदू अल्पसंख्यक हैं और मुसलमान बहुसंख्यक हैं। राज्य सरकार का मानना घ्है कि अल्पसंख्यक की परिभाषा जिलेवार बदली जानी चाहिए। हम अश्विनी उपाध्याय मामले में असम सरकार को पक्षकार बनाने का प्रयास करेंगे और अल्पसंख्यकों को जिलेवार परिभाषित करने पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। सरमा ने कहा कि मैंने गृह मंत्री अमित शाह से इस पर चर्चा की है। लेकिन, राज्य के पार्टी बनने की कोई गुंजाइश है या नहीं, यह सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों पर निर्भर करता है।श सरमा ने कहा कि केंद्र सरकार भी अल्पसंख्यकों को उनके आर्थिक, शैक्षिक, लिंग और अन्य सामाजिक मानकों पर विचार करते हुए जिला और ब्लॉक—वार परिभाषित करने के पक्ष में है। भाषाई अल्पसंख्यकों के मुद्दे पर मुख्यमंत्री ने कहा कि असम में, बराक घाटी और धुबरी जिले में बंगाली अल्पसंख्यक नहीं हैं, लेकिन वे डिब्रूगढ़ और ऊपरी असम क्षेत्रों में अल्पसंख्यक हैं।

लग्जरी गाड़ी खरीदने पर रोक, सैर-सपाटा बंद

जानें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कैसे टारगेट दे मंत्रियों को काम पर लगाया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 5 साल तक सरकार चलाने के बाद सत्ता में वापसी का रिकॉर्ड बनाने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शपथ के तुरंत बाद ना सिर्फ खुद काम संभाल लिया है, बल्कि अपने 52 मंत्रियों को काम पर लगा दिया है। उन्होंने शुरुआत में ही मंत्रियों को साफ संदेश दे दिया है कि योगी के कैबिनेट में यदि मौका मिला है तो उन्हें काम करके दिखाना होगा। मुख्यमंत्री ने फिजूलखर्ची, लग्जरी गाड़ियों से दूर रहने की हिदायत देते हुए कहा है कि सभी को प्रदेश में रहकर लगातार काम करना होगा। 100 दिन का टारगेट थमाने के साथ ही सरकार ने मंत्रियों के सैर सपाटे पर भी रोक लगा दी है। सरकारी खजाने का ना हो दुरुपयोगः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नवनियुक्त मंत्रियों को अपनी सरकार के शुरुआती 100 दिनों के कामकाज का अजेंडा

सौंपते हुए सरकारी खजाने का दुरुपयोग रोकने और सरकार में अनुशासन का वातावरण बनाने की सख्त हिदायद दी है। योगी ने बतौर मुख्यमंत्री अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत 25 मार्च को शपथ ग्रहण करने के बाद, ताबड़तोड़ फैसले करना शुरू कर दिए हैं, जिससे सरकार के कामकाज की गति को तेज किया जा सके। सरकार के गठन और मंत्रियों को विभागों का बंटवारा किए जाने के बाद अब सभी की नजरें मंत्रिमंडल के प्रदर्शन पर टिकी हैं। भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करने की कायम रहे छविः कामकाज के बारे में मुख्यमंत्री की ओर मंत्रियों को दिए गए निर्देशों के तहत उन्हें पुराना स्टाफ नहीं रखने और अपनी मर्जी से निजी स्टाफ रखने से बचने को कहा गया है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री योगी ने भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त नहीं करने और पारदर्शिता बरकरार रखने की अपनी पिछली सरकार की छवि को बनाए रखने के लिए कुछ अहम फैसले किए हैं। 100 दिन का मास्टर प्लान बनाकर सीएम के सामने करना होगा पेशः इनमें मंत्रियों को 100 दिन के कामों का लक्ष्य तय करने वाला अजेंडा थमाया गया है। इसके तहत सभी मंत्रियों को अपने विभाग के कामकाज की 100 दिन में समीक्षा कर आगे की कार्ययोजना का मास्टर प्लान बनाना होगा।

जी—23 के नेताओं की पूरी हुई मांग, कमलनाथ बोले— 3 महीनों में होंगे अध्यक्ष पद के चुनाव

नयी दिल्ली। पांच राज्यों में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव के बाद से ग्रैंड ओल्ड पार्टी कांग्रेस के भीतर घमासान मचा हुआ है और जी—23 के नेता भी काफी चिंतित हैं। इसी बीच मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कमलनाथ का बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि जी—23 के साथियों की मांगों को मान लिया गया है और 3 महीने में चुनाव होंगे। 3 महीने में होंगे संगठनात्मक चुनावः समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा कि जी23 के लोग मेरे बहुत करीबी हैं, वे सालों से मेरे मित्र और सहयोगी रहे हैं। उनकी ऐसी कोई भी मांग नहीं थी, जो पूरी नहीं हो सकती थी। उनकी मांगों को स्वीकार कर लिया गया हैं। जी—23 के लोग चुनाव चाहते थे और 3 महीने में चुनाव होंगे, सबकुछ आप लोगों के सामने होगा। कौन हैं जी—23 के नेता?: जी—23 कोई अलग समूह नहीं है बल्कि यह लोग कांग्रेस पार्टी के ही सदस्य हैं। दरअसल, गुलाम नबी आजाद समेत कांग्रेस के 23 नेताओं ने नेतृत्व के प्रति असंतोष जताते हुए पार्टी की अंतरिम अध्यक्षा सोनिया गांधी को पत्र लिखा था। जिसके बाद इन्हें जी—23 के नाम से पुकारा जाने लगा। गुलाम नबी आजाद जी—23 के अगुआ बनकर उभरे थे। जी—23 नेताओं में गुलाम नबी आजाद के अलावा कपिल सिब्बल, शशि थरूर, मनीष तिवारी, आनंद शर्मा, पीजे कुरियन, रेणुका चौधरी, मिलिंद देवड़ा, मुकुल वासनिक, जितिन प्रसाद, भूपेंद्र सिंह हुड्डा और राजेंद्र कौर भट्टल शामिल हैं। हालांकि जितिन प्रसाद ने कांग्रेस को अलविदा कहते हुए भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली थी।

पेट्रोल, डीजल की कीमतों में 10 दिन में नौवीं बार की गई बढ़ोतरी

नयी दिल्ली। पेट्रोल और डीजल

की कीमतों में बृहस्पतिवार को एक बार फिर 80 पैसे प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई। पिछले 10 दिनों में कुल 6.40 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई है। सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम विपणन कंपनियों की तरफ से जारी मूल्य संबंधी अधिसूचना के मुताबिक, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 101.01 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर अब 101.81 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.27 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर 93.07 रुपये प्रति लीटर हो गई है। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में देश भर में वृद्धि की गई है, लेकिन इनके दाम स्थानीय कर के आधार पर अलग—अलग राज्यों में भिन्न हैं। पेट्रोल तथा डीजल की कीमतें करीब साढ़े चार महीने तक स्थिर रहने के बाद 22 मार्च को बढ़ाई गई थीं। तब से नौवीं बार कीमतों में वृद्धि की गई है। पेट्रोल और डीजल की कीमत में अब तक कुल 6.40 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई है।

सीएम की कुर्सी छोड़ेंगे नीतीश! भाजपा का होगा अपना मुख्यमंत्री, बिहार की सियासत में अटकलों का दौर

भले ही पांच राज्यों में विधानसभा के चुनाव संपन्न हुए हैं। उत्तर प्रदेश में इन चुनावों की हलचल सबसे ज्यादा थी। लेकिन अब बिहार की राजनीति में कई कयासों का दौर शुरू हो गया है। बिहार की राजनीति में सबसे ज्यादा इस बात की चर्चा है कि अब नीतीश कुमार उपराष्ट्रपति या राष्ट्रपति बनेंगे और राज्य में भाजपा का अपना मुख्यमंत्री होगा। इस चर्चा के बीच नीतीश कुमार ने पत्रकारों से बातचीत में कुछ ऐसा बयान दे दिया जिसके बाद इन दावों को और मजबूती मिल रही है। दरअसल, नीतीश कुमार ने पत्रकारों से बातचीत में राज्यसभा जाने की इच्छा जताई। उन्होंने कहा कि लोकसभा, विधानसभा और विधान परिषद का वह सदस्य हो चुके हैं। लेकिन अभी तक राज्यसभा का सदस्य नहीं बने हैं।

इसी के बाद अब यह कयास लगने शुरू हो गए हैं कि क्या बिहार के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देकर

नीतीश कुमार राज्यसभा जाएंगे? कयास इस बात को लेकर भी तेज हो गई है कि नीतीश कुमार उपराष्ट्रपति भी बन सकते हैं। ऐसे में वह राज्यसभा के भी अध्यक्ष होंगे। 16 सालों से बिहार के मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार के इस बयान से इस बात की अटकलें तेज हो गई है कि वह अब एक नई भूमिका के इच्छुक हैं। उपराष्ट्रपति पद के लिए अगले कुछ महीनों में चुनाव भी होने हैं। सबसे बड़ी बात है कि नीतीश कुमार की इच्छा का समर्थन बिहार में जदयू की सहयोगी भाजपा खुलकर कर रही है। हालांकि यह बात भी सच है कि मुजफ्फरपुर के बोचहा में होने वाले विधानसभा उपचुनाव के परिणाम के बाद ही बिहार की राजनीति कोई नई करवट लेगी।

भाजपा का प्लान दरअसल, बिहार में कानून—व्यवस्था को लेकर नीतीश कुमार का ग्राफ लगातार गिरता जा रहा है। विपक्ष नीतीश सरकार पर जबरदस्त तरीके से हमलावर है। शराबबंदी और कानून व्यवस्था के मुद्दे पर लगातार नीतीश कुमार को अपनों के साथ—साथ विपक्षी दलों की भी आलोचना झेलनी पड़ रही है। यही कारण है कि स्थिति को भांपते हुए भाजपा बिहार में अपना सीएम बनाने की जुगत में लग गई है। वर्तमान में देखें तो बिहार में भाजपा की कई बड़ी बैठक लगातार देखने को भी मिल रही है। भाजपा का प्लान यह है कि अगर नीतीश कुमार बिहार छोड़कर दिल्ली की राजनीति में जाते हैं, ऐसे में राज्य में वह अपना मुख्यमंत्री बनाएगी। 2020 के विधानसभा चुनाव में 74 सीटें जीतने के बावजूद भी भाजपा ने 43 सीटों पर जीत हासिल करने वाली जदयू के नेता नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनने दिया। हालांकि अब वीआईपी पार्टी के भी तीन विधायक भाजपा में शामिल हो गए हैं। ऐसे में उसकी संख्या 77 हो गई है और वह बिहार में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

कौन बनेगा सीएम

जानकारी के मुताबिक नीतीश कुमार के दिल्ली की राजनीति में जाने के साथ ही भाजपा बिहार में अपना मुख्यमंत्री देगी। जबकि जदयू के कोटे से दो उपमुख्यमंत्री रहेंगे। सूत्रों के मुताबिक भाजपा दलित या ओबीसी चेहरे को बिहार में आगे कर सकती है ताकि जातियों का समीकरण बना रहे। वर्तमान में देखें तो केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय मुख्यमंत्री की रेस में सबसे आगे हैं। इसके अलावा मुख्यमंत्री की रेस में भाजपा के सम्राट चौधरी और शाहनवाज हुसैन का भी नाम सामने आ रहा है। डिप्टी सीएम की रेस में जदयू कोटे से मुंगेर के सांसद और पार्टी अध्यक्ष ललन सिंह का नाम है। इसके अलावा बिहार सरकार में शिक्षा मंत्री और नीतीश कुमार के बेहद ही खास विजय कुमार चौधरी और मंत्री श्रवण कुमार भी डिप्टी सीएम की रेस में आगे चल रहे हैं।

एक देवर ने भाभी को दे डाला दिल, भाभी जब उसके साथ भागने को तैयार नहीं हुई तो, सनकी देवर ने खा लिया जहर

गोंडा |कहते है प्यार अंधा होता है ऐसा ही कुछ देवर और भाभी के बीच हो गया,काफी दिनों से देवर भाभी के बीच प्रेम प्रसंग चलता रहा लेकिन पति पत्नी की तरह पूरी आजादी नही थी,पूरी आजादी के लिये देवर भाभी ने कहीं भाग चलने की सहमति बना ली,बाहर भागने के लिये रेल का रिजर्वेशन भी करा लिया लेकिन जब भागना हुआ तो भाभी भागने के लिये तैयार नही हुई तो देवर ने जहर खाने की धमकी भी दिया इस पर भी भाभी पिघली नही। फिर सनकी देवर ने खा लिया जहर,जिसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां देवर की हालत गम्भीर बताई जा रही है। देहात कोतवाली कि पीछे स्थित तोपखाना निवासी रंजीत कुमार चार भाई है जिसमें सबसे बड़े और उसके छोटे भाई का विवाह हो चुका है। शेष दो भाइयों की शादी अभी नहीं हुई है। सभी चारों भाई कहीं न कहीं मजदूरी मेहनत करके अपने जीवन का उपार्जन कर रहे हैं।पिछले वर्ष दिसंबर में इन भाइयों के पिता का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। पिता अपनी मृत्यु से पूर्व चारों भाइयों को जो पैतृक संपत्ति थी अलग–अलग बांट कर दे दिया है। सभी भाई अपने अपने पैर्तिक आवास में निवास करते हैं । इन भाइयों में दो भाई वाहन चालक हैं जो लोगों को वाहन चलाते हैं रंजीत भी एक पुलिस अधिकारी का वाहन चलाता था। 25 वर्षीय रंजीत का दूसरे भाई की पत्नी से प्रेम संबंध हो गया और काफी दिनों से प्रेम संबंध चल रहा था। कल शाम को भाभी और देवर ने तय किया था कि साथ में हम दोनों लोग मुंबई भाग चलेंगे और वही रहेंगे। रंजीत दोनों लोगों का टिकट भी करा लिया था। लेकिन जब बीती रात्रि दोनों को भागना था, तो भाभी ने इंकार कर दिया कि हम कहीं भाग तक नहीं जाएंगे। इससे नाराज होकर रंजीत ने जहर खाने की धमकी भी दिया लेकिन भाभी साथ भागने को तैयार नही हुई,तो रंजीत खेत में डाला जाना वाला कीटनाशक दवा आज खा लिया, जिससे उसकी हालत खराब हो गई और आज दोपहर में उसको जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। हालांकि उसके बड़े भाई ने बताया की इस बात की जानकारी सभी भाइयों को थी कि इसके साथ में इसकी भाभी का प्रेम संबंध चल रहा है। लेकिन किसी ने कोई आपत्ति नहीं की थी, बड़े भाई का कहना था तीसरे नंबर का भाई और अब इसकी ही शादी की जाती लेकिन उसने गलत फैसला कर लिया।

बाईक से जा रहे युवक सांड से टकराया पेट में घुसा छुट्टा सांड़ की सींग हुई दर्दनाक मौत

गोंडा। जनपद मुख्यालय से घर वापस लौट रहे बाईक सवार की सड़क पर खड़े सांड़ से हुई जबरदस्त टक्कर से चालक के पेट में सांड़ की सींग घुस जाने से उसकी घटना स्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि बाइक सवार अस्पताल में जिन्दगी मौत के बीच संघर्ष कर रहा है। वहीं घटना की खबर सुनकर परिवार जनों में कोहराम मच गया। देर रात्रि की बताई जाती है। जहाँ वजीरगंज थाना क्षेत्र के ग्राम सभा अचल पुर के मजरे गोपालीपुर निवासी राम केवल पुत्र रामशरन उम्र करीब 30 वर्ष एवं संतोष पुत्र शिव प्रसाद उम्र 40 वर्ष किसी कार्य से गोण्डा मुख्यालय गए हुए थे जो वहां से वापस घर लौट रहे थे। तभी दर्जीकुँआ–डुमरियाडीह के बीच बनघुसरा पेट्रोल पम्प के पास पहुचें ही थे कि बीच सड़क पर खड़े एक सांड़ से टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि सांड़ का सींग राम केवल के सीने में घुस गया जिससे उसकी अस्थि–पंजर टूट कर बाहर निकल आयी और मौके पर ही उसकी दर्दनाक मौत हो गई। जबकि एक बाइक सवार संतोष भी बुरी तरह से घायल हो गया। मौके पर स्थानीय लोगों व राहगीरों ने एम्बुलेंस बुलाकर घायल को इलाज के लिए गोण्डा भेज दिया, जहाँ वह अब जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है। वहीं मौके पर पहुंची डुमरियाडीह चौकी पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इधर मौत की खबर सुनते ही परिवार जनों में कोहराम मच गया। जहां मृतक के घर वालों का रो–रो कर बुरा हाल है। बताया जाता है कि मृतक राममकेवल खाना बनाने का कारीगर था,उसी से उसके परिवार का भरण पोषण होता था,उसकी मृत्यु जाने से अब वह आसरा भी खत्म हो गया। घटना के बाद पूरे गांव में सन्नाटा पसरा है।

बाला जी के जागरण में झूमे भक्त ,हजारो की संख्या में जुटे भक्त

गोण्डा |श्री बालाजी सेवा समिति महाराजगंज की ओर से बालाजी महाराज की शान में रात भंडारे व रात्रि जागरण का आयोजन किया गया |तिवारी ब्रदर्स के प्रांगण में मेहंदीपुर बालाजी की भव्य झांकी सजाई गई |भक्तों ने अर्जी लगा कर बालाजी महाराज का दर्शन व पूजन अर्चन की |पूरी रात भक्तों ने रात्रि जागरण.. का आनंद लिया |..जागरण. में बालाजी जागरण. इवेंट गोण्डा का रहा। जागरण में प्रयागराज की सुप्रसिद्ध भजन गायिका जूली सिंह,गगनदीप,गितेश प्रकाश व राहुल की झमाझम अदभुत प्रस्तुति से पूरा प्रांगण भक्तिमय हो गया। जागरणकी आगाज भजन गायक गितेश प्रकाश ने गणेश वंदना सारे जगत में पूजा होइया गणपति बप्पा मोरिया व तेरे बालाजी सरकार डंका बाजे मेंहदीपुर में,..... पर सबको झूमने को मजबूर कर दिया |बालाजी जागरणइवेंट के कलाकारों ने तेरे नैना पर जाऊं बलिहारी रसिया, व होली के गीतों की प्रस्तुति पर लोग थिरक उठे। भक्तों ने कलाकारों के साथ बृंदावन के फूलों की होली का आनंद लिया। प्रयागराज की सुप्रसिद्ध भजन गायिका जूली सिंह ने बाबा के दरबार में बाला जी के साथ साथ बाबा खाटू श्याम जी के भजनों की हाजिरी लगाकर शुरुआत की। उन्होंने गाया श्ओ राम नाम मतवाले लंका को जलाने वाले,.... हम तो बाबा के सहारे चलते हैं...हारे हारे हारे वो वो वो तुम हारे के सहारे... . प्रस्तुति पर लोगों को झूमने के लिए मजबूर कर दिया, व तालियों से खूब वाहवाही बटोरी |उनकी भारत माता के चरणों में सरहद पर निगरानी कर रहे सैनिकों के लिए जोरदार प्रस्तुति की।

छात्र एवं छात्राएं भारतीय संस्कृति का करें संरक्षण: डॉ. वेद प्रकाश

संजीवनी कॉलेज में एक दिवसीय सेमिनार का हुआ आयोजन

बहराइच। संजीवनी कॉलेज ऑफ एजूकेशन एंड फिजिकल एजूकेशन कीर्तनपुर में आज बी. एड. विभाग की ओर से एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया |सेमिनार का विषय भारतीय सांस्कृतिक विरासत रखा गया |इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के मुख्य अधीक्षक अजीत प्रताप सिंह रहे। सेमिनार में बी0एड0 के छात्र एवं छात्राओं ने प्रतिभाग किया |सेमिनार का शुभारम्भ मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन एवं सरस्वती वन्दना के साथ हुआ |सेमिनार की निर्देशिका राजकुमारी त्रिपाठी ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत के महत्व एवं विशेषताओं पर प्रकाश डाला। बी0 एड0 विभागाध्यक्ष डा0 वेद प्रकाश ने भारतीय संस्कृति के रहन–सहन एवं मूल्यों का आधुनिक जीवन में आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज विकास की अंधाधुंध दौड़ में इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि छात्र एवं छात्राऐ भारतीय संस्कृति का संरक्षण करते हुए आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करने में सक्षम बने |मुख्य अतिथि अजीत प्रताप सिंह ने भी भारतीय संस्कृति पर अपने विचार प्रस्तुत किए। सेमिनार में बी0एड0 विभाग के प्रवक्ता साधना सिंह, शिप्रा श्रीवास्तव,दीप्ति सिंह, राजेंद्र प्रसाद निषाद आदि मौजूद रहे |बीएड छात्र शिवम वर्मा, खुर्शीद आलम अंसारी, सूरज पाण्डेय, प्राची तिवारी, सुनिधि गर्ग, प्रज्ञा निगम, जोया फातिमा, हरिकेश, चन्द्र प्रकाश, सुशील रावत, छवी शुक्ला, अर्चना, मनी राम, अर्पिता सिंह, माधुरी शुक्ला, अम्बरीश श्रीवास्तव ने भी सेमिनार विषय पर अपने विचार व्यक्त किये |सेमिनार के प्रश्नकाल के दौरान प्रतिभागियों अम्बरीश श्रीवास्तव, अर्पिता सिंह, सुनिधि गर्ग ने काफी प्रभावशाली ढंग से प्रश्नो के उत्तर दिए |कार्यक्रम का संचालन शिवानी दास गुप्ता तथा शिवाजी मिश्रा ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता लक्ष्मी शुक्ला एवं शिवानी शुक्ला ने की। राष्ट्रगान के साथ सेमिनार का समापन किया गया।

राम नवमी में 15 स्थानों पर स्वास्थ्य विभाग लगाएगा स्वास्थ्य बूथ

अयोध्या। रामनगरी अयोध्या का प्रसिद्ध चौत्र राम नवमी का नौ दिवसीय मेला दो अप्रैल से प्रारम्भ हो रहा है। मेले में आने वाले लाखों श्रद्धालुओं का आवश्यकता पड़ने पर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से 15 स्थानों पर अस्थायी स्वास्थ्य बूथ बनाए जाएंगे। अयोध्या का प्रसिद्ध चौत्र राम नवमी मेला दो अप्रैल से प्रारम्भ हो रहा है। इस मेले में बड़ी संख्या में देश के कोने कोने से श्रद्धालु अयोध्या दर्शन के लिए आते हैं। मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने व मेला क्षेत्र की सफाई व्यवस्था को दुरूस्त रखने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने अस्थायी स्वास्थ्य बूथों की व्यवस्था की है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से मेला क्षेत्र में 15 स्थानों पर स्वास्थ्य बूथ बनाए जा रहे हैं। मेला क्षेत्र में स्वास्थ्य बूथ हनुमान गढ़ी, जन्मभूमि, कनक भवन, रेलवे स्टेशन, तुलसी उद्यान झुनकीघाट, नागेश्वर नाथ मंदिर, राम की पैड़ी, कच्चा घाट, पक्का घाट, कन्ट्रोल रूम, हनुमानगुफा, साकेत पेट्रोल पम्प, रामघाट हाल्ट स्टेशन, कारसेवकपुरम में बनाए जा रहे हैं। इन बूथों पर 24 घंटे स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध रहेंगी। स्वास्थ्य विभाग ने किसी भी बड़ी घटना दुर्घटना से निपटने के लिए 10 एम्बुलेंस मेला क्षेत्र में लगायी हैं जो हर समय तैयार रहेंगी। एम्बुलेंस जन्मभूमि, कनकभवन, रेलवे स्टेशन, नागेश्वरनाथ मंदिर, कच्चा घाट, पक्का घाट, कन्ट्रोल रूम, हनुमान गुफा, साकेत पेट्रोल पम्प, कोतवाली अयोध्या पर मौजूद रहेंगी। अयोध्या मेला क्षेत्र की सफाई व्यवस्था के लिए 400 सफाईकर्मियों को लगाया गया है। मेले की व्यवस्थाओं की देखरेख करने के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से चार मेला अधिकारी बनाए गए हैं जो सफाई व्यवस्था व बूथों की व्यवस्थाओं पर निगाह रखेंगे। मेला क्षेत्र में आने वाले महिला व पुरूष श्रद्धालुओं के लिए पांच स्थानों पर अस्थायी शौचालय बनाए जा रहे हैं। ये शौचालय हनुमानगुफा, चौधरी चरण सिंह घाट, संत तुलसीदास घाट, साकेत पेट्रोल पम्प के पास बनाए जा रहे हैं।

बीमा पालिसी का वार्षिक लक्ष्य प्राप्त करने में फैजाबाद मंडल प्रथम

अयोध्या। एक वर्ष में तीन लाख से अधिक बीमा पालिसियां कर अयोध्या मण्डल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। फैजाबाद मण्डल को 310000 बीमा पालिसियों करने का वार्षिक लक्ष्य दिया गया था। जिसके सापेक्ष 310000 पालिसियां कर फैजाबाद ने अपना वार्षिक लक्ष्य वित्तीय वर्ष समापन से एक दिन पूर्व ही प्राप्त किया। कई वर्षों बाद यह ऐतिहासिक उपलब्धि वरिष्ठ मंडल प्रवंधक चन्द्र सिंह दास्पा के कुशल नेतृत्व में हासिल हुई |चन्द्र सिंह दास्पा ने वरिष्ठ मंडल प्रवंधक के रूप में दिनांक 24 मई 2021 को कार्य भार ग्रहण किया था । उन्होंने अपने दूरदर्शी व निर्भिकता से निर्णय लेने की क्षमता के कारण जहां शाखाओं में प्रशासनिक स्तर पर आमूलचूल सुधार किया , शिकायतों के तत्काल निस्तारण की व्यवस्था बनाई वहीं पर जन जन में बीमा की जागरूकता के लिए स्थानीय अखबारों, आकाशवाणी व अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सहयोग से अभियान चलाया। विपणन के साथ साथ दावा निस्तारण, पालिसी धारकों की त्वरित सेवा में भी फैजाबाद मंडल अग्रणी रहा। इस अभूतपूर्व उपलब्धि पर उन्होंने मंडल के सभी कर्मचारियों, अधिकारियों, विकास अधिकारियों, सीएलआइए, एसोसिएट्स, अभिकर्ताओं और क्षेत्र की जनता के प्रति आभार जताया और अपनी शुभकामनाएं दी।

सपा विधायक व जिला अध्यक्ष ने डीएम को शिकायती पत्र देकर एमएलसी चुनाव निष्पक्ष कराने की मांग की

बहराइच |जिले की मटेरा सीट से सपा विधायक व सपा जिलाध्यक्ष ने पुलिस पर गम्भीर आरोप लगाते हुए कहा कि एमएलसी चुनाव मे भाजपा प्रत्याशी के लिए डराया जा रहा वोटरों को। उत्तर प्रदेश मे हो रहे एमएलसी चुनाव को लेकर जनपद बहराइच मे ग्राम प्रधानों व बीडीसी सदस्यों को भाजपा प्रत्याशी के समर्थन मे जबरिया वोट करने के लिए पुलिस ने वोटरों को डरवाना धमकाना शुरू कर दिया है |जिसके लिए आज मटेरा की विधायिका मारिया अली शाह व सपा जिलाध्यक्ष राम हर्ष यादव ने अपने सपा कार्यकर्ताओं के साथ जिलाधिकारी व पुलिस कप्तान से मिलकर निष्पक्ष चुनाव करवाने की बात कही। ज्ञात हो कि सपा विधायिका मारिया अली शाह व सपा जिलाध्यक्ष राम हर्ष यादव ने अपने शिकायती पत्र के माध्यम से कहा कि जिले की पुलिस यहाँ भाजपा प्रत्याशी के समर्थन मे ग्राम प्रधानों व बीडीसी सदस्यों को डरा धमका रही है |जिससे यहाँ निष्पक्ष मतदान होना संभव नही है |सपा जिलाध्यक्ष श्री यादव ने कहा यदि यही हाल रहा तो सपा कार्यकर्ता सड़को पर उतर कर धरना प्रदर्शन के लिए बाध्य होगें |इस अवसर पर मटेरा विधायक मारिया अली शाह ने कहा कि भाजपा पुलिस प्रशासन के सहारे चुनाव जीतना चाहती है |जिसे कतई बर्दाश्त नही किया जाएगा |इस अवसर पर पार्टी के महासचिव जफर उल्ला खांश्बंटी समेत एक दर्जन लोग मौजूद थे।

रामलला के दर्शन अवधि में तीन घंटे की वृद्धि

ट्रस्ट पदाधिकारियों व जिला प्रशासन की हुई संयुक्त बैठक

अयोध्या। आगामी 10 अप्रैल रामलला के जन्मोत्सव के मौके पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ होने वाली है। जिसको लेकर जिला प्रशासन और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट सतर्क हो गया है। इस साल राम मंदर के निर्माण को देखते हुए 15 से 20 लाख भक्तों के आने की उम्मीद की जा रही है। अयोध्या राम भक्तों से पूरी तरह से भर जाएमी |ऐसे में रामलला के श्रद्धालुओं को दर्शन में कोई समस्या ना हो इसे ध्यान में रखते हुए श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारी और जिला प्रशासन की संयुक्त बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि इस साल 3 घंटे की अवधि रामलला के दर्शन को बढ़ा दी जाए। पहले प्रथम पाली में रामलला का दर्शन सुबह 7:00 बजे शुरू होकर के पूर्वाह्न 11:00 बजे तक चलता था। 11:00 बजे भगवान की आरती होने के बाद भोग लगाकर मंदिर का पट भगवान के दोपहर विश्राम के लिए बंद कर दिया जाता था। इसके बाद अपराह्न 2:00 बजे पुनः राम लला की आरती होती थी और आम श्रद्धालुओं के लिए भगवान के पट 6:00 बजे शाम तक दर्शन के लिए खुल जाते थे। अब श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने इस ऐतिहासिक समयावधि में बदलाव किया है। अब राम लला का दर्शन सुबह 6:00 बजे शुरू होकर 11:30 बजे दिन तक चलेगा और दूसरी बेला में 2:00 बजे से शुरू होकर के देर शाम 7:30 बजे तक चलेगा। रामनवमी के पहले दिन तीन अप्रैल से रामलला के दर्शन समय अवधि में बदलाव किया जाएगा, जो रामनवमी तक चलेगा। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासिचव चंपत राय ने कहा कि रामलला के मंदिर में दर्शन के लिए 2 शिफ्ट में दर्शनार्थी जाते हैं। प्रातः 7:00 बजे से 11:00 बजे तक रामलला का दर्शन होता है। सेकंड शिफ्ट में दोपहर 2:00 बजे से 6:00 बजे तक रामलला का दर्शन आम जनमानस को मिलता है।

बाग में सरसों रखने से मना करने पर आधा दर्जन लोगों ने लाठी-डंडों से पीटा

मिल्कीपुर–अयोध्या। इनायतनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत मुंगीसपुर गांव निवासी राजित राम ने पुलिस को शिकायती प्रार्थना पत्र देते हुए बताया है कि मेरी बाग की भूमि पर गांव के राम किशोर पुत्र राम दुलारे व मेवा लाल पुत्र रामहेत खेत से सरसों काट कर रख रहे थे |जब सरसों रखने से मना किया गया तो रामकिशोर, मेवा लाल, ओम प्रकाश, देशराज, अशोक कुमार, अनिल कुमार,बालिका राम योजनाबद्ध तरीके से लाठी डंडा व कुल्हाड़ी से हमलावर हो गए पीड़ित की गुहार लगाने पर जब परिवार के अन्य सदस्य दौड़े तो उनको भी मारपीट कर लहूलुहान कर दिया । सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को उपचार के लिए सीएचसी मिल्कीपुर भेजा जहां पर डॉक्टरों ने हालत गंभीर बताते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया जहां पर उपचार चल रहा है। प्रभारी निरीक्षक थाना कोतवाली इनायतनगर अमरजीत सिंह ने बताया कि पीड़ित इंद्रजीत पुत्र झगरू राम की तहरीर पर आधा दर्जन लोगों के खिलाफ मुकदमा अपराध संख्या 137ध्22 धारा 147, 148, 323, 324 ,504 ,506 आईपीसी के तहत मुकदमा दर्ज कर पकड़े गए आरोपियों को पाबंद करते हुए मामले की जांच की जा रही है। फिलहाल दोनों पक्षों से लोगों को चोटे आई है अभी तक दूसरा पक्ष तहरीर नहीं दिया है तहरीर मिलते ही दूसरे पक्ष से भी मुकदमा दर्ज कर लिया जाएगा।

डीएम व एसएसपी ने परीक्षा कमाण्ड सेन्टर का किया निरीक्षण

बहराइच। जिले में 24 मार्च 2022 से प्रारम्भ हुई बोर्ड परीक्षा शासन की मंशानुसार पूरी शुचिता के साथ नकलविहीन सम्पन्न कराने के हेतु कलेक्ट्रेट स्थित ई–डिस्ट्रिक्ट कार्यालय में स्थापित परीक्षा कमाण्ड सेन्टर का जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चन्द्र व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक केशव कुमार चौधरी ने औचक निरीक्षण कर परीक्षा केन्द्रों पर संचालित गतिविधियों के बारे जानकारी प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि जनपद के सभी 104 परीक्षा केन्द्र क्लोज सर्किट टी.वी. फैसिलिटी से आच्छादित हैं। कमाण्ड सेन्टर पर स्थापित टी.वी. स्क्रीन पर समस्त सेन्टरों की निगरानी की जा रही है। परीक्षा कमाण्ड सेन्टर के निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी डॉ. चन्द्र ने मौके पर मौजूद बोर्ड परीक्षा के लिए नियुक्त सुपर जोनल मजिस्ट्रेटध्मुख्य राजस्व अधिकारी अवधेश कुमार मिश्र से आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हुए तैनात कार्मिकों को निर्देश दिया कि बोर्ड परीक्षा की संवेदनशीलता को देखते हुए पूरी जिम्मेदारी के साथ अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करें तथा कमाण्ड सेन्टर के माध्यम से परीक्षा केन्द्रों की प्रभावी पर्यवेक्षण करते रहें। निरीक्षण के समय उप जिलाधिकारी न्यायिक सदर सुभाष सिंह धामी, ई–डिस्ट्रिक्ट मैनेजर सुमित तिवारी व अन्य सम्बन्धित लोग मौजूद रहे।

शिक्षक एक दीपक की तरह समाज को करता है रोशनः संतोष देव पांडे

अयोध्या। शिक्षक एक दीपक की तरह जल कर पूरे समाज को रोशन करता है और उसके द्वारा किया गया कार्य समाज के लिए अनुकरणीय होता है। विकासखंड पूरा में सेवानिवृत्त शिक्षकों के सम्मान में आयोजित समारोह में उक्त उदगार व्यक्त करते हुए बीएसए संतोष कुमार देव पांडे ने सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षकों के स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए अपेक्षा की कि वह समाज को अपने ज्ञान एवं अनुभव से निरंतर रोशन करने का प्रयास करेंगे और आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे। इस अवसर पर जिला मंत्री चक्रवर्ती सिंह ने कहा कि शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता, जहां रहेगा रोशनी लुटाता रहेगा। चिराग का अपना कोई मकान नहीं होता। शिक्षक सेवानिवृत्त होने के पश्चात विभागीय बंधन से मुक्त हो जाता है, वह स्वतंत्र होकर समाज को अपने ज्ञान और अनुभव से रोशन कर सकता है। कार्यक्रम का संचालन पूरा ब्लाक के अध्यक्ष डॉ. सत्येंद्र गुप्ता ने करते हुए कहा कि सेवानिवृत्त होने वाले सभी शिक्षक शिक्षिकाएं हमारे लिए आदरणीय हैं, हमें इनका हमेशा सम्मान करना चाहिए और उनके बताए रास्ते पर चलने का प्रयास करना चाहिए। आज सेवानिवृत्त होने वाले शिक्षकों में ओमप्रकाश सिंह, रमेश मौर्या, गीता मिश्रा, आशा श्रीवास्तव, माजदा बेगम, शकील बेगम रही |कार्यक्रम में विचार व्यक्ति करते हुए सेवानिवृत शिक्षिका गीता मिश्रा ने कहा ब्लॉक के शिक्षक शिक्षिकाओं ने जो सम्मान दिया है उसके लिए वह हमेशा ऋणी रहेंगे और हमेशा किसी भी सहयोग के लिए तत्पर रहेंगी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से संचराज वर्मा, अनिल प्रताप सिंह ,मिठाई लाल, राम सूरत शर्मा, अजीत प्रताप सिंह,अमित सिंह, राजीव सिंह, रजनी रंजन जायसवाल, सुमित सिंह, उग्रसेन, गंगाराम अनामिका मिश्रा, नम्रता सिंह, उषा वर्मा, श्वेता वर्मा, संध्या सिंह, विक्रम सूर्यवंशी, रीनू सिंह , पुष्पा वर्मा, मी सहाय,उर्मिला देवी ,चेतना मौर्या, गीतांजलि, कल्पना, आरती सिंह, रमेश कुमार उपस्थित रहे। सेवानिवृत्त होने वाले सभी शिक्षकों के अंगवस्त्र, धार्मिक पुस्तक एवं स्मृतिचिन्ह देकर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय द्वारा सबको सम्मानित किया गया |कार्यक्रम का आयोजन पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरा पर उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के तत्वाधान में किया गया।

डीसीएम की चपेट में आने से कार चालक की मौत

अयोध्या। थाना कैंट के चौकी सहादतगंज क्षेत्र में ओवरब्रिज पर हवा चेक करा रहे कार चालक को अज्ञात डीसीएम ने टक्कर मार दी जिससे उसकी मौत हो गयी। प्राप्त जानकारी के अनुसार उमाशंकर पुत्र बृजकिशोर आयु लगभग 42 वर्ष निवासी तिवारीपुर थाना बांसी जिला सिद्धार्थनगर आज शाम लगभग 4:30 बजे कार से उतर कर हवा चेक कर रहा था की अज्ञात डीसीएम द्वारा चालक को कुचल दिया केंट इंस्पेक्टर अरुण प्रताप सिंह ने बताया कि कार चालक उमाशंकर को घायल अवस्था में 108 एंबुलेंस के द्वारा जिला चिकित्सालय भिजवाया गया जहां इमरजेंसी ड्यूटी कर रहे डॉक्टर विजय हरि आर्य ने मृतक घोषित कर शव को मोर्चरी में रखवा दिया वही इमरजेंसी ड्यूटी कर रहे फार्मेसिस्ट संजय गुप्ता द्वारा पोस्टमार्टम हेतु पुलिस मेमो कोतवाली नगर भिजवा दिया गया है कैंट कोतवाली इंस्पेक्टर अरुण प्रताप सिंह ने बताया कि मृतक की जेब से 16 सो रुपए नकद आधार कार्ड ड्राइविंग लाइसेंस बरामद हुए हैं वही पुलिस भी असमंजस में पड़ गई है कि जिस कार को उमाशंकर चला रहा था वह भी घटनास्थल से नदारद हो गया है।

कृषक परिवार के तीन युवाओं के जेई बनने पर गावों में खुशी की लहर

मिल्कीपुर–अयोध्या। अथक परिश्रम और लगन ने जिले के तीन गांवों के किसान परिवारों में खुशी का माहौल उत्पन्न कर दिया। इन तीन किसान परिवारों से जुड़े युवाओं का बिजली महकमे में कनिष्ठ अभियंता पद पर चयन किया गया है। (इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स कंट्रोल एंड इंस्ट्रुमेंटेशन, कंप्यूटर) पदों की लिखित परीक्षा उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड द्वारा आयोजित की गई थी। जिसमे मिल्कीपुर तहसील के हैरिंग्टनगंज ब्लॉक के ग्राम आदिलपुर पूरे ईश्वर दूबे (रवतीगंज) निवासी कृषक गंगाराम के पुत्र राजकुमार को उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत निगम लिमिटेड की कनिष्ठ अभियंता भर्ती परीक्षा 2021 में सफलता प्राप्त हुई है। इससे पहले यूपीपीसीएल, एसएससी जेई मेंस, कनिष्ठ अभियंता पद पर भी चयन हो चुका है। बताते हैं कि राजकुमार बचपन से ही मेधावी रहे हैं। इन्होंने किसान विद्यालय इंटर कॉलेज कुचेरा बाजार से इंटर मीडियट परीक्षा उत्तीर्ण किया था। उसके बाद राजकीय पॉलीटेक्निक गोंडा से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में 2019 में डिप्लोमा किया। अपनी सफलता का श्रेय अपनी माता सावित्री देवी तथा मार्गदर्शन का श्रेय एक्सीलेंटविजन टेक्निकल एकेडमी की इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की विभागाध्यक्षा पारुल श्रीवास्तव को देते हैं। दो भाई और चार बहन में सबसे छोटे राज कुमार की लगातार सफलता पर गांव के लोग खुद को गौरवांवित महसूस कर रहे हैं। राज कुमार ने प्रतियोगी परीक्षाओं में लगे युवाओं के लिए कहा कि सफलता के लिए कठिन परिश्रम के साथ सतत प्रयास तथा धैर्य की आवश्यकता है। वहीं दूसरी तरफ हैरिंग्टनगंज ब्लॉक के ग्राम ढेमा शिवबक्शराय में पांच भाई बहनों के साथ पले बढ़े कृषक राम मनोरथ तथा गृहणी मीना देवी के पुत्र लालमणि ने यूपी आरवीएनएल जेई भर्ती परीक्षा में सफलता हासिल करके इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर बनने का सपना पूरा कर लिया। लालमणि ने अंबेडकर विद्यालय इंटर कॉलेज से हाई स्कूल, माधव सर्वोदय इंटर कालेज से इंटर करने के बाद राजकीय पॉलीटेक्निक गोंडा से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग से 2019 में डिप्लोमा किया। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपनी शिक्षिका पारुल श्रीवास्तव तथा अपनी माँ मीना देवी को दिया। इनके गांव वालों ने हर्ष जताया है। लाल मानी का मानना है कि सफलता के लिए सतत कठिन प्रयास की जरूरत होती है। सोहावल तहसील के पूरे भवानी पुरवा चिर्रा मोहम्मदपुर निवासी कृषक राम अचल के पुत्र जयेंद्र कुमार यादव का चयन उत्तर प्रदेश पावर कार्पोरेशन लिमिटेड में विद्युत कनिष्ठ अभियंता पद पर हुआ है। इन्होंने एआईटी इंटर कॉलेज से हाईस्कूल 81 फीसदी अंको से उत्तीर्ण किया था। उसके पश्चात राजकीय पॉलीटेक्निक गोंडा से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा 78 प्रतिशत अंको से 2017 में पास किया। अपनी सफलता का श्रेय अपनी मम्मी और पापा के साथ एक्सीलेंटविजन टेक्निकल एकेडमी प्रयागराज की इलेक्ट्रिकल इंजिनियरिंग की बेहतर शिक्षा को देते हैं।

साफ पानी पीने के लिए हर घर नल की योजनाः सांसद जगदम्बिका पाल

पानी में आरसैनिक की मात्रा ज्यादा होने से मनुष्य प्रभावित

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। संसद सत्र के दौरान लोक सभा में भाजपा के सांसद जगदम्बिका पाल ने नियम 377 के अंतर्गत अपने संसदीय क्षेत्र डुमरियागंज, सिद्धार्थनगर सहित देश के कई प्रदेशो उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार, असम, मणिपुर और छत्तीसगढ़ राज्यों के अनुमेय स्तर से ऊपर भूजल में आर्सेनिक की मात्रा ज्यादा होने से यहां का पानी पीने योग्य नही है। पीने के पानी आरसैनिक की मात्रा ज्यादा होने से मनुष्यों के स्वास्थ्य को बहुत प्रभावित कर रही है।

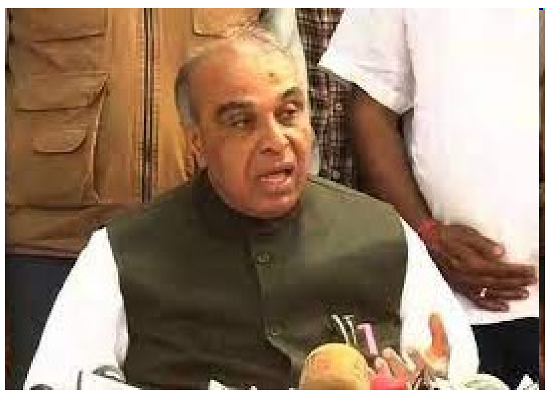

आरसैनिक की युक्त पानी लंबे समय तक पीने से त्वचा, फेफड़े,और गुर्दे में कैंसर जैसे अनेको बीमारियों के साथ–साथ त्वचा से संबंधित कई बीमारियां जैसे हाइपरकेराटोसिस कई बीमारियों का लोग शिकार हो रहे है। घुलनशील अकार्बनिक आर्सेनिक तीव्र रूप से विषैला होता है, ज्यादा मात्रा में होने से जठरांत्र संबंधी लक्षण, हृदय और तंत्रिका तंत्र को खराब कर देता है और अंततः मृत्यु हो जाती है। और जो लोग बच जाते है उनके अंदर अस्थि मज्जा अवसाद, हेमोलिसिस, हेपेटोमेगाली, मेलेनोसिस, पोलीन्यूरोपैथी और एन्सेफेलोपैथी जैसे भयंकर बीमारियों की चपेट में आ जाते है। ष्भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य पर आर्सेनिक के प्रभाव पर एक विस्तृत और व्यापक चर्चा करना बहुत अनिवार्य है और प्रभावित समुदायों में सबसे महत्वपूर्ण कार्य पीने के लिए एक सुरक्षित जल आपूर्ति के प्रावधान किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

इसलिए सदन के माध्यम से मैं भारत सरकार से अनुरोध करता हूं कि उक्त मामले की गंभीरता को देखते हुए पीने के पानी की उचित व्यवस्था किया जाय जिस पर हमारी सरकार का विशेष ध्यान भी है प्रत्येक नागरिक को साफ पीने का पानी के लिए हर घर नल की योजना की शुरूआत भी किया है।

उसका बाजार क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों में समारोह पूर्वक वितरित किया गया परीक्षाफल

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका बाजारधसिद्धार्थनगर। उसका बाजार विकास क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के बच्चों में गुरूवार को समारोहपूर्वक परीक्षाफल का वितरण किया गया। कंपोजिट विद्यालय परसा खुर्द, सिंहोंरवा व सजनी में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी महेंद्र कुमार ने कहा कि शासन के निर्देश पर सभी विद्यालयों

पर समारोहपूर्वक परीक्षाफल वितरण के साथ अभिभावकों व पुरातन छात्रों की बैठक भी की जा रही हैद्य उन्होंने अभिभावकों का आह्वान किया कि वे अपने पाल्यो को नियमित रूप से विद्यालय भेजें और शासन द्वारा प्रेषित 1100 की धनराशि से उनके लिए ड्रेस ,जूते मोजे ,बैग व स्वेटर अवश्य क्रय कर लें। कार्यक्रम में कक्षा आठ व पांच में प्रथम तीन स्थान पाने वाले बच्चों को ट्राफी प्रदान की। सभासद शैलेंद्र शर्मा ने कहा कि वे विद्यालय के विकास में पूरा सहयोग करेंगे। इस दौरान बालजीत कुमार ,अभय श्रीवास्तव , रामसेवक गुप्ता ,अभिषेक मिश्रा ,अमित त्रिपाठी ,अर्पिता ,अर्चना ,राजाराम ,रितेश ,हरिकेश ,रामकृष्ण ,चतुर्गुन प्रसाद आदि मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क कार्यों में धांधली, जिलाधिकारी दिया जांच का आदेश

अनंत मिश्रा/दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका/सिद्धार्थनगर। ग्रामीण क्षेत्रों को शहर से जोडने के लिए चलाई जा रही प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत पकड़ी से सियरापार तक चल रहे सड़क निर्माण कार्य में धांधली का आरोप समाजसेवी विनोद सिंह ने जिलाधिकारी को पत्र देकर किया है। पत्र में बताया कि पांच किलोमीटर लंबी सड़क में मानक के विपरीत काम कराया जा रहा

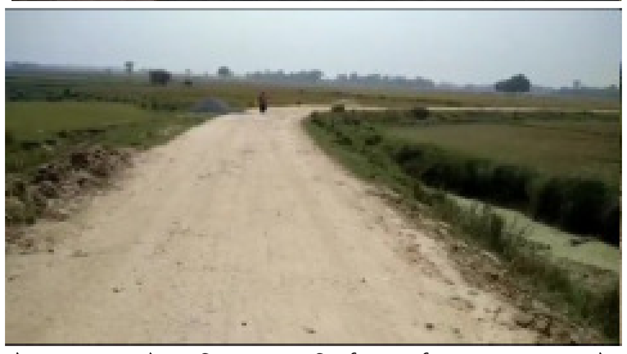

है। गुणवत्ता को दरकिनार कर निर्माण कार्य कराया जा रहा है। निर्माण में सड़क की पटरी का अता–पता नही है। बावजूद इसके विभाग सड़क की पेंटिंग में लगा है। और तो और निर्माण कार्य हार्ट मिक्स प्लांट के जगह मैन्युअल प्लांट से कराया जा रहा है। सड़क गुणवत्ता विहीन मानकों पर निर्मित किया जा रहा है। जिलाधिकारी दीपक मीणा ने कहा कि अगर गुणवत्ता विहीन कार्यों में धांधली का शिकायती पत्र मिला है टीम गठित कर जांच के आदेश दे दिया गया है।

प्राथमिक विद्यालय झंडे नगर में आयोजित वार्षिकोत्सव समारोह

नामांकन में सहयोग करेंगे पुरातन छात्र

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। परिषदीय विद्यालयों में शतप्रतिशत नामांकन,

उपस्थिति एवं ठहराव सुनिश्चित करने में पुरातन छात्र, छात्राओं का सहयोग महत्वपूर्ण है. प्राथमिक विद्यालय झंडे नगर में आयोजित वार्षिकोत्सव समारोह में विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों, पुरातन छात्रों तथा अभिभावकों को संबोधित करते हुए उपरोक्त विचार प्रधानाध्यापक नियाज अहमद ने व्यक्त किए। बैठक में अभिभावकों को स्कूल यूनिफॉर्म, स्वेटर, बैग एवं जूते, मोजों के लिए डीबीटी द्वारा प्राप्त धनराशि एक हजार एक सौ के वास्तविक उपभोग के विषय में अभिप्रेरित किया गया। सहायक अध्यापिका साधना श्रीवास्तव द्वारा अभिभावकों को जेंडर इक्विटी के बारे में जागरूक करते हुए बेटों–बेटियों में भेदभाव न करने तथा सभी का नामांकन कराने हेतु प्रेरित किया गया। बच्चों को परीक्षाफल वितरित करने के साथ ही विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरुस्कृत किया गया। कार्यक्रम में शिक्षामित्र संतोष कुमार, एसयमसी अध्यक्ष चौधरी चौहान, मोतीलाल, किरन देवी, प्रमिला, पुष्पा, कैलाशी आदि सदस्यों, अभिभावकों की उपस्थिति रही.

शिक्षक से दुर्व्यवहार के मामले में घिरे थानाध्यक्ष शिवनगर डिड़ई

शिक्षक विधायक ध्रुव त्रिपाठी बुधवार को जिलाधिकारी दीपक मीणा से मिले

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर।मिठवल विकास खंड क्षेत्र के चौधरी राम मिलन सिंह स्मारक इंटर कॉलेज घुमची पर 24 मार्च को परीक्षा डियूटी प्रथम पाली रिलीवर के रुप में तैनात सहायक अध्यापक विजय बहादुर सिंह के साथ शिवनगर डिड़ई के थानाध्यक्ष अभिमन्यु सिंह के द्वारा जांच के नाम पर दुर्व्यवहार करने का मामला तूल पकड़ लिया है। मामले को गंभीरता से लेते हुए क्षेत्रीय शिक्षक विधायक ध्रुव त्रिपाठी बुधवार को जिलाधिकारी दीपक मीणा से मिलकर विवेचक बदलावाकर निष्पक्ष जाँच की मांग करते हुए संबंधित के खिलाफ कार्रवाई की मांग किया। पीड़ित शिक्षक ने बताया कि परीक्षा चल रही थी। उस दौरान स्टेटिक मजिस्ट्रेट राम प्रताप शुक्ल, सेक्टर मजिस्ट्रेट खंड शिक्षा अधिकारी कमला प्रसाद व शिक्षक अभय सिंह मौजूद थे। थानाध्यक्ष अभिमन्यु सिंह पुलिस कर्मियों के साथ विद्यालय परिसर में बिना अनुमति के घुसे। कक्ष निरीक्षकों की तलाशी लेने लगे। मुझसे पूछने लगे कि आप यहाँ कैसे खड़े है। हम बताए कि परीक्षा डियूटी कर रहे हैं। तब हमने बताया कि रिलीवर डियूटी पर हुं। उसके बाद थानाध्यक्ष अभिमन्यु सिंह हमको अशोभनीय भाषा का प्रयोग कर गाली गुप्ता दिए। फर्जी मुकदमें फंसाने की धमकी भी दिए। जिससे हम आहत होकर तत्काल बिहोश होकर गिर गए। इस संबंध में शिक्षक विधायक ने बताया कि शिक्षक साथ थानाध्यक्ष ने जो दुर्व्यवहार किया गलत है। जिलाधिकारी मामले की निष्पक्ष जाँच कराने का आश्वासन दिए है।

कोरोना से बचाव को लेकर आदर्श लघु माध्यमिक विद्यालय में टीकाकरण

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। कोरोना महामारी से बचाव को लेकर कोरोना

टीकाकरण अभियान के तहत गुरुवार को आदर्श लघु माध्यमिक विद्यालय बर्डपुर में अध्ययनरत 12 से 14 वर्ष की उम्र के छात्र छात्राओं को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्साधिकारी डॉक्टर सुबोध चंद्रा व डॉ0 महेश कुमार के नेतृत्व में स्वास्थ्य टीम में सूरज चौहान, नेहा प्रकाश, अनुष्का राय द्वारा बच्चों को टीकाकरण किया गया। इस दौरान विद्यालय के प्रधानाचार्य राजकुमारी पाण्डेय संचालक नितेश पाण्डेय, पवन पाठक, संतोष यादव , उमेश यादव आदि मौजूद रहे।

कड़कती धूप में बारिश जैसा माहौल, स्कूल परिसर में भरा नालियों का गंदा पानी

दैनिक बुद्ध का संदेश

भनवापुर/सिद्धार्थनगर। जाम नालियों का गंदा पानी उफना कर प्राथमिक विद्यालय के परिसर में भर गया है,जिससे बच्चों को कक्षा में गंदे पानी से होकर जाना मजबूरी बन गया है। भनवापुर ब्लाक क्षेत्र के करीब छः हजार से अधिक जनसंख्या वाले गांव भरवठिया मुस्तहकम में इकलौता प्राथमिक विद्यालय में करीब 188 बच्चे पंजीकृत है। प्राथमिक विद्यालय के गेट व उसके पास जहां गंदगी का ढेर लगने से बच्चों व शिक्षकों का स्कूल में पढ़ने व पढ़ाने में परेशानी होती है।

- भनवापुर ब्लाक क्षेत्र के भरवठिया मुस्तहकम में नही आता सफाईकर्मी
- सचिव व प्रधान की अनदेखी बना प्राथमिक विद्यालय भरवठिया मुस्तहकम। सरकार लाखों रुपए खर्च करती है। विद्यालयों के नवीनीकरण में

भारत व राज्य सरकार जहां लोगों को जागरूक करते हुए बीमारियों से बचाव के लिए स्वच्छता का पाठ पड़ा रहे है,वही भनवापुर ब्लाक क्षेत्र के गांवो में तैनात सफाई कर्मचारी स्वच्छता अभियान को बट्टा लगा रहे हैं।

गांव के गंदे पानी की नालियां भी स्कूल के आस पास से होकर गुजरती है,जो सफाईकर्मी की लापरवाही के कारण जाम होकर उफना कर बहती है। सबसे जादे हद तब हो गयी जब स्कूल का ताला खोलने शिक्षक बृहस्पतिवार को स्कूल पहुंचे तो नालियों का गंदा पानी उफना कर स्कूल परिसर में भर गया,जिससे स्कूल में पढ रहे मासूम बच्चों को अपने कक्षा में जाने के लिए नालियों के गंदे पानी से हो कर जाना पड़ रहा है। स्कूल के प्रभारी प्रधानाध्यापक उमेश कुमार पटेल, शिक्षका मणि तोमर, ममता जयसवाल, सुदर्शन, माला यादव, अभिभावक जगराम, सूरज, राजू श्याम सुंदर आदि ने गांव, स्कूल परिसर तथा उसके आस पास साफ सफाई अबिलंब कराए जाने की मांग की है। इस संबध में सहायक विकास अधिकारी पंचायत सुरेंद्र कुमार मिश्रा ने कहा कि इस तरह की लापरवाही अक्षम्य है इसकी जांज कर संबंधित सफाईकर्मी के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी तथा स्कूल परिसर की सफाई कराई जाएगी।

सहायक अध्यापक के सेवानिवृत्ति पर विदाई कार्यक्रम का आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थ नगर। डा. भीमराव अम्बेडकर प्राथमिक विद्यालय महरिया

में सहायक अध्यापक चिनमुन प्रसाद सेवानिवृत्ति हुए। विद्यालय के प्रति अतुलनीय योगदान रहा। विद्यालय प्रबंधन समिति व विद्यालय परिवार, छात्र–छात्राएं एवं ग्राम वासी ,पूर्व प्रधान प्रतिनिधि ग्राम पंचायत थरौलीध्सेवानिवृत्ति कानूनगो राजाराम जी ,उ.प्र. सीनियर बेसिक शिक्षक संघ के मंत्री शिशिर मिश्राजी, प्रधानाध्यापक भवनाथ ,प्रबन्धक जीतेन्द्र राव, दिनेश सहानी,अजय वर्मा, राजेश सहानी,इन्द्रजीत,सन्तराम,शेषमणि,चन्द्रप्रकाश, राघवेन्द्र, ग्राम प्रधान ओमप्रकाश सिंहआदि उपस्थित रहे। लोगों ने उनके रोगमुक्त और शोकमुक्त की कामना की।

11 गैर जमानती अपराधियों की कुर्की का प्रावधान शुरू– एएसपी सुरेश चंद्र रावत

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। एएसपी सुरेश चंद्र रावत ने इटवा सर्किल के

थाना मिश्रौलिया, गोल्हौरा और इटवा के उपनिरीक्षक गण तथा थाना डुमरियागंज पर डुमरियागंज सर्किल के थाना त्रिलोकपुर, भवानीगंज, डुमरियागंज व पथरा के उपनिरीक्षक गण की विवेचनाओं और जांच आदि की समीक्षा की गई स लंबित प्रकरणों को 10 दिन में निस्तारित किए जाने का निर्देश दिया गया स न्यायालय द्वारा निर्गत गैर जमानती वारंट ओ का शत–प्रतिशत तमिल किए जाने हेतु निर्देश दिए गए स गैर जमानती वारंट जारी होने के बाद भी जिन 11 अपराधियों की गिरफ्तारी नहीं हो पाई है उनकी कुर्की 15 दिवस में किए जाने हेतु निर्देशित किया गयास पुलिस कर्मियों का सम्मेलन करके अगले एक माह में सभी गांव में बीट पुलिस अधिकारी द्वारा बीट चौपाल आयोजित कर सभी रंजिश ओका चिन्ना कन करते हुए बीट बुक अपडेट किए जाने हेतु निर्देशित किया गया स रात्रि में गश्त व पिकेट के समय संदिग्धा वाहनों की सघन चेकिंग सुनिश्चित किए जाने के निर्देश सभी थाना प्रभारियों को दिए गए।

परिषदीय विद्यालयों के बिजली बिल कौन करेगा जमा, प्रधान ने किया इनकार

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। अखिल भारतीय प्रधान संगठन जिला इकाई का प्रतिनिधि मंडल बुधवार को जिलाध्यक्ष चंद्रमणि यादव के नेतृत्व में जिलाधिकारी दीपक मीणा को ज्ञापन सौंपकर मांग किया कि आप द्बारा जो परिषदीय विद्यालयों में बिजली बिल भुगतान का आदेश जारी किया है। उसे तत्काल निरस्त करें। बिजली बिल का भुगतान बेसिक शिक्षा विभाग के कंपोजिट ग्रांट से कराने का आदेश दे। वरना संगठन आंदोलन के लिए विवश होगा।यादव ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि पूर्व में ही ग्राम निधि के राज्य वित्त एवं 15 वां वित्त के धन से परिषदीय विद्यालयों का कायाकल्प कराकर पूरे प्रदेश में मिशाल कायम किए थे। शासन से ग्राम निधि खाते से ही समुदायिक शौचालय में तैनात कर्मी व पंचायत सहायक के मानदेय भी भुगतान कराने का आदेश दे रखा है। छोटे ग्राम पंचायतों में पंचायत सहायक एवं शौचालयों में तैनात कर्मी के मानदेय में खत्म हो जाता है। इस बार निदेशालय से धन की कटौती करके धन भेजा गया है। ऐसे में परिषदीय विद्यालयों के बिजली बिल भुगतान का ग्राम निधि खाते से कराने का जो तुगलकी फरमान जारी किया गया सरासर गलत है। इसका संगठन पुरजोर विरोध करेगा। तत्काल आदेश निरस्त नहीं किया गया। तो संगठन एमएलसी चुनाव के बाद उक्त मुद्दे को लेकर आंदोलन के लिए विवश होगा। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष राजेश पासवान, जिला प्रवक्ता विजय यादव, नौगढ़ ब्लॉक अध्यक्ष राम नरेश यादव, बीर बहादुर यादव व राजेंद्र यादव आदि मौजूद रहे।

राह चलते अभद्र टिप्पणी करने पर शिकायत

त्रिलोकपुर थाना क्षेत्र के एक गांव की घटना

दैनिक बुद्ध का संदेश

भनवापुर/सिद्धार्थनगर। त्रिलोकपुर थाना क्षेत्र के एक दलित युवक नें अपने नाबालिग बहन (15 वर्ष) के ऊपर गांव के ही एक अन्य बिरादरी के युवक पर राह चलते बहन के ऊपर फबतियां कसनें व अभद्र टिप्पणी करने का आरोप लगाया है। त्रिलोकपुर थाने पर दिए अपने प्रार्थना पत्र में दलित युवक नें लिखा है कि गांव के एक गैर बिरादरी का युवक हमारे नाबालिग बहन के मोबाइल पर बार बार फोन करता है तथा कहीं आने जाने पर उसे देखकर फबतियां कसने के साथ अभद्र टिप्पणी करता है। युवक के द्वारा बहन व हमारे परिवार को फर्जी जालसाजी मुकदमे में फसाने की धमकी भी देता है। पूरे मामले की जानकारी प्रार्थना पत्र के माध्यम से त्रिलोकपुर पुलिस को देते हुए कार्यवाई की मांग की है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक त्रिलोकपुर रामकृपाल शुक्ल नें बताया कि दोनो पच्छों को थाने पर बुलाया गया दोनो पच्छों ने आपस में सुलह समझौता कर लिया है।

सम्पादकीय

हाई कोर्ट ने कहा कि संसद कानून में मौजूद असमानताओं को दूर करना चाहिए। यानी बात घूम–फिर कर संसद के दायरे में पहुंचती है। बहरहाल, हाई कोर्ट ने कहा– सदियों पुरानी सोच है कि पति अपनी पत्नियों के शासक होते हैं। वे उनके शरीर, उनके मन और आत्मा पर राज करते हैं। इस सोच को मिटा दिया जाना चाहिए...

न्यायिक निर्णय के निहितार्थ

व्यवस्था अगर ऐसी है, जिसके लिए कानूनी प्रावधान मौजूद नहीं है, तो न्यायालय की व्यवस्था तब तक एक राय ही रहती है, जब तक विधायिका उसके मुताबिक कानून निर्मित ना कर दे। इसका अपवाद सिर्फ तब होता है, अगर सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला संविधान के अनुच्छेद 140 को लागू करते हुए दिया हो। आम समझ यह है कि हाई कोर्ट चूंकि संवैधानिक अदालत है, इसलिए उसका फैसला सारे देश में तब तक लागू होता है, जब तक कोई हाई कोर्ट उससे अलग व्यवस्था ना दे दे। जब उच्च न्यायालयों की व्यवस्थाएं परस्पर विरोधी हो जाएं, तो फिर अंतिम निर्णय के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया जाता है। बहरहाल, व्यवस्था अगर ऐसी है, जिसके लिए कानूनी प्रावधान मौजूद नहीं है, तो फिर न्यायालय की व्यवस्थाएं तब तक एक राय ही रहती हैं, जब तक विधायिका न्यायालय की भावना के मुताबिक कानून निर्मित ना कर दे। इसका अपवाद सिर्फ तब होता है, अगर सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला संविधान के अनुच्छेद 140 को लागू करते हुए दिया हो। इसीलिए अगर इस सिस्टम को ध्यान में रखें, तो वैवाहिक बलात्कार के बारे में हाल में आए कर्नाटक हाई कोर्ट के फैसले एक सीमित महत्त्व का निर्णय ही समझा जाएगा। वर्तमान सरकार की तरफ से यह पहले ही साफ किया जा चुका है कि वह उस राय से सहमत नहीं है, जैसी हाई कोर्ट ने जताई है। तो इस बारे में कोई कानूनी प्रावधान होगा, इसकी उम्मीद कम ही है। बहरहाल, यह जरूर है कि हाई कोर्ट ने जो टिप्पणियां कीं, उससे इस मुद्दे पर जारी बहस आगे बढ़ी है। कर्नाटक हाई कोर्ट की सिंगल बेंच ने कहा कि एक व्यक्ति केवल इसलिए दुष्कर्म के मुकदमे से बच नहीं सकता, क्योंकि पीडिघ्ता उसकी बीवी है। बेंच ने कहा यह समानता के अधिकार के खिलाफ है। हाई कोर्ट की बेंच ने बलात्कार के मामले को खारिज करने की पति की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की। उसने बलात्कार के आरोपों को हटाने से इनकार कर दिया। हाई कोर्ट ने कहा कि संसद कानून में मौजूद असमानताओं को दूर करना चाहिए। यानी बात घूम–फिर कर संसद के दायरे में पहुंचती है। बहरहाल, हाई कोर्ट ने कहा– सदियों पुरानी सोच है कि पति अपनी पत्नियों के शासक होते हैं। वे उनके शरीर, उनके मन और आत्मा पर राज करते हैं। इस सोच को मिटा दिया जाना चाहिए। हाई कोर्ट ने कहा कि इस मान्यता को बदलने की जरूरत है। उसने कहा महिलाओं के साथ अन्याय के मामले में सख्त कदम उठाने की जरूरत है। हाई कोर्ट ने मैरिटल रेप के बढ़ते मामलों पर कहा कि पति की ओर से बीवी पर यौन हमले के गंभीर परिणाम होते हैं। इसका पत्नी पर मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दोनों पर प्रभाव पड़ता है।

खतरनाक है, यह अल्पसंख्यकवाद

वेद प्रताप वैदिक

इधर सर्वोच्च न्यायालय में एक बड़ी मजेदार याचिका पेश की गई है, अश्विनी उपाध्याय के द्वारा! उन्होंने अपनी याचिका में तर्क दिया है कि अल्पसंख्यकता के नाम पर कई राज्यों में बड़े पैमाने पर ठगी चल रही है। जिन राज्यों में जो लोग बहुसंख्यक हैं, वे यह कहते हैं कि हम लोग अखिल भारतीय स्तर पर अल्पसंख्यक हैं, इसलिए हमें अल्पसंख्यकों की सब सुविधाएं अपने राज्य में भी मिलनी चाहिए। जैसे जम्मू–कश्मीर में मुसलमान बहुसंख्यक हैं लेकिन उन्हें इसके बावजूद वहां अल्पसंख्यकों की सारी सुविधाएं मिलती हैं। लेकिन जम्मू–कश्मीर के हिंदुओं, यहूदियों और बहाईयों को, जो वास्तव में वहां अल्पसंख्यक हैं, उन्हें अल्पसंख्यकों की कोई सुविधा नहीं मिलती। यही हाल मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल, लक्षद्वीप, मणिपुर और पंजाब का है।

इन राज्यों में रहनेवाले धार्मिक बहुसंख्यकों को भी अल्पसंख्यक मानकर सारी विशेष सुविधाएं दी जाती हैं। उपाध्याय ने अपनी याचिका में अदालत से मांग की है कि अल्पसंख्यकता का निर्णय राज्यों के स्तर पर भी होना चाहिए ताकि वहां के अल्पसंख्यकों को भी न्याय मिले। तर्क की दृष्टि से उपाध्याय बिल्कुल ठीक हैं लेकिन बेहतर तो यह हो कि देश में से मजहब, भाषा और जाति के आधार पर समूहों को बांटा न जाए। राष्ट्रीय एकता के लिए यह बेहद जरुरी है। दूसरे शब्दों में संख्या के आधार पर बना यह विशेष दर्जा राज्य स्तरों पर तो खत्म होना ही चाहिए, यह भी जरुरी है कि इसे अखिल भारतीय स्तर पर भी खत्म किया जाए।

1947 में भारत का बंटवारा इसी मजहबी संख्यावाद के कारण हुआ और अब देश के चुनाव और राजनीति का आधार यही जातीय संख्यावाद बन गया है। यही क्रम आगे चलता रहा तो 1947 में भारत के सिर्फ दो टुकड़े हुए थे लेकिन 2047 में भारत के सौ टुकड़े भी हो सकते हैं। यह बेहद खतरनाक प्रक्रिया है। महाराष्ट्र और कर्नाटक ने संविधान के ढीले–ढाले प्रावधानों का सहारा लेकर मजहबी और भाषाई आधार पर अपने नागरिकों को बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्गों में बांट रखा है। हमारी केंद्र सरकार ने उक्त याचिका का समर्थन करते हुए संवैधानिक प्रावधान का हवाला भी दे दिया है। संविधान में ऐसा करने की छूट है। लेकिन किसी भी राष्ट्रवादी सरकार को हिम्मत करनी चाहिए कि वह इस राष्ट्रभंजक संवैधानिक प्रावधान को खत्म करवाए और देश के सभी नागरिकों को उनकी जरुरत के मुताबिक (जाति और धर्म के आधार पर नहीं) आवश्यक विशेष सुविधाएं अवश्य दी जाएं।

कब तक होगा जरूरतों से समझौता

कुछ यही हाल अब भारत में भी हो रहा है। अभी ये नौबत नहीं आई कि तेल के लिए लंबी लाइनें लग रही हैं या मारपीट हो रही है। मगर जिस तरह से महंगाई की चोट पड़ती जा रही है उसमें एक न एक दिन जनता टूट ही जाएगी। जो सत्ता में बैठे हैं, उनके घर, बंगले, रोज का आलीशान खर्च, सुरक्षा का तामझाम सब वैसे ही चलेगा, कटौती और समझौते केवल जनता को करने पड़ेंगे। देखना है कि जनता कब तक...

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दैनन्दिन कार्यों की एक सूची बताई है, जिसमें प्रमुख हैं– 1. पेट्रोल–डीजल–गैस का रेट कितना बढ़ाऊं, 2. लोगों की श्खर्चे पे चर्चाश कैसे रुकवाऊं, 3. युवा को रोजगार के खोखले सपने कैसे दिखाऊं, 4. आज किस सरकारी कंपनी को बेचूं, 5. किसानों को और लाचार कैसे करूं। इस सूची को राहुल गांधी ने हैशटैग रोज सुबह की बात के साथ ट्वीट किया है। वे लगभग रोज ही किसी न किसी तरह बढ़ती महंगाई और लोगों की लाचारी को लेकर इसी तरह के ट्वीट करते हैं। उनके साथ–साथ कांग्रेस पार्टी और विपक्ष के कई अन्य नेता भी बढ़ती महंगाई को लेकर चिंता जतलाते हैं। कांग्रेस ने तो अब बाकायदा सड़क पर उतरने का अभियान छेड़ दिया है। मगर सरकार महंगाई को लेकर मचे इस हंगामे की ओर ध्यान ही नहीं दे रही है। सरकार का घमंड तो देखिए वो इस मामले पर ऐसा कोई बयान भी नहीं देती जिससे लोगों को ये उम्मीद बंधे कि आज नहीं तो कल कीमतें कम होंगी या थोड़ी राहत मिलेगी। उल्टा भाजपा नेता ये दलील दे रहे हैं कि रूस और यूक्रेन के युद्ध के कारण तेल की कीमतें बढ़ रही हैं। हालांकि अभी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में थोड़ी कमी आई है, मगर देश में पिछले नौ दिनों में आठ बार पेट्रोल और डीजल की कीमत बढ़ गई है। दिखने को ये बढ़ोतरी कभी 70 पैसे, कभी 80 पैसे की होती है। लेकिन रोजाना की ये बढ़ोतरी एक महीने में आम आदमी की जेब पर कितनी भारी पड़ सकती है, यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है। चुनावी सभाओं में जनता के हमदर्द बनने वाले प्रधानमंत्री मोदी अब महंगाई पर कोई आश्वासन देते नजर नहीं आते। खुद की गरीबी का अंतरराष्ट्रीय मंच पर रोना रो चुके मोदीजी को अब गरीबों और मध्यमवर्गीय लोगों की तकलीफ से कोई सरोकार नहीं दिखता। विभिन्न मंचों से वे अब भी बड़ी बातें करते ही नजर आते हैं। मुमकिन है कि भाजपा के राज में अगले कुछ सालों में भव्य राम मंदिर बनने के साथ हिंदुत्व का बोलबाला हो जाए। अल्पसंख्यक थोड़ा और डर कर रहने पर मजबूर कर दिए जाएं। धर्म की अफीम और राष्ट्रवाद के नशे में मोदी–मोदी के नारे लगाने वाले लोगों की गिनती कुछ और बढ़ जाए। विपक्षी दल आपसी एकता की बात करते–करते अंत में अपने–अपने स्वार्थों के दायरे में कैद रहें और भाजपा को अपनी मर्जी से देश को चलाने का मौका मिल जाए। लेकिन इस सबके बीच हिंदुस्तान का आम आदमी किस दशा में पहुंच चुका होगा, यह कल्पना करके ही डर लगता है। गरीबों को पांच किलो अनाज, किसानों को साल के कुछ हजार रुपए, और इसके साथ कभी एक–दो सिलेंडर, या थोड़ी बहुत कर्जमाफी के टुकड़े जनता के सामने डालकर उससे फिर से वफादारी की मांग की जाएगी। और रोजमर्रा के संघर्षों से टूट चुकी जनता शायद ऐसा करने को तैयार भी हो जाए। आत्मसम्मान खो चुका देश किस तरह की गति प्राप्त होगा, यह समझना कठिन नहीं है। इन बातों में अतिशयोक्ति लग सकती है, लेकिन फिलहाल हालात इसी ओर इशारा कर रहे हैं। और जिस तरह का हाल पड़ोसी देश श्रीलंका में हो चुका है, कोई आश्चर्य नहीं कि अगले कुछ वक्त में भारत के लोग भी ऐसे ही बदहाल दिखेंगे। श्रीलंका में भी राजपक्षे सरकार ने सत्ता संभालने के वक्त बहुत बड़े–बड़े दावे देशप्रेम, राष्ट्रवाद के नाम पर किए थे। अब उनका खोखलापन नजर आ रहा है। श्रीलंका के लोग बढ़ती महंगाई के कारण अपने घरेलू खर्चों और रोजमर्रा के खानपान में भी कटौती कर रहे हैं। एक लीटर पेट्रोल की कीमत तीन महीने में दोगुनी से भी ज्यादा हो चुकी है। इस कीमत पर भी पेट्रोल व केरोसिन हासिल करने के लिए इतनी लंबी कतारें लग रही हैं कि श्रीलंका सरकार ने गैस स्टेशनों पर स्थिति को काबू में रखने के लिए सेना की टुकड़ियों को भेजा है। कतारों में लगे वृद्ध लोगों की जानें गई हैं और कुछ जगहों पर हिंसा भी हो गई है। कागज महंगा होने के कारण बच्चों की परीक्षाएं नहीं हो रही हैं, कुछ अखबारों को अपना प्रिंट संस्करण अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करना पड़ा है। देश विदेशी मुद्रा की भयंकर कमी से जूझ रहा है, जिस वजह से आयात करना असंभव होता जा रहा है। कर्ज का भुगतान नहीं हो पा रहा है, जिसके कारण श्रीलंका की स्थिति डिफाल्टर जैसी हो रही है और अब वह चीन, भारत और आईएमएफ के सामने हाथ फैला रहा है। जब आप याचक की मुद्रा में होते हैं तो शोषण होना तय है। श्रीलंका के हाल भी कुछ ऐसे ही हैं। अगर उसे कर्ज देने वाले अपने फायदे की शर्तें रखेंगे तो उसे मजबूरी में उन्हें मानना पड़ेगा। यह सब काम सरकार ही करेगी। लेकिन सरकार असल में अमूर्त होती है। उसमें सामने जो चेहरा होता है, वो सत्ता चलाता है, और उसके पास ये सुविधा होती है कि जब हालात संभालना कठिन हो जाए तो सत्ता से हट सकता है। इससे उसके राजनैतिक जीवन पर असर पड़ सकता है, लेकिन आर्थिक तौर पर वह उन दिक्कतों को नहीं झेलता, जो आम जनता को सहनी होती हैं। सत्ता से हटा व्यक्ति लाचार हो सकता है, गरीब नहीं। श्रीलंका में भी वहां की सरकार के लिए फैसलों का नतीजा जनता ही भुगतेगी। अगर कर्जदाता श्रीलंका का शोषण करने का मन बना लेंगे तो असल में शोषण जनता का ही होगा। कुछ यही हाल अब भारत में भी हो रहा है। अभी ये नौबत नहीं आई कि तेल के लिए लंबी लाइनें लग रही हैं या मारपीट हो रही है। मगर जिस तरह से महंगाई की चोट पड़ती जा रही है उसमें एक न एक दिन जनता टूट ही जाएगी। जो सत्ता में बैठे हैं, उनके घर, बंगले, रोज का आलीशान खर्च, सुरक्षा का तामझाम सब वैसे ही चलेगा, कटौती और समझौते केवल जनता को करने पड़ेंगे। देखना है कि जनता कब तक और किस हद तक अपनी जरूरतों से समझौता करती है।

चुनाव सुधारों का लाभ भाजपा को!

इस पर सभी पार्टियों और राज्यों की सरकारों के साथ सहमति बनानी होगी। अभी जिस तरह से भारत में सारे चुनाव राष्ट्रपति मॉडल पर लड़े जा रहे हैं और गैर भाजपा दलों को हर चुनाव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ लडना पड़ रहा है उसे देखते हुए लग रहा है कि अगर पूरे देश में एक साथ चुनाव हुए तो उसका फायदा भी भाजपा को होगा। सो, कुल मिला कर अभी चुनाव सुधार के नाम पर जितने ...

अजीत द्विवेदी

भारत में लंबे समय से चुनाव सुधार की जरूरत बताई जा रही है। कुछ सुधार जरूर हो रहे हैं लेकिन वे इतने छोटे हैं कि उनका प्रत्यक्ष असर बहुत कम दिखाई देता है या फिर सुधार ऐसे हैं, जिनका कोई प्रभाव मतदान की प्रक्रिया पर नहीं हुआ है। जैसे जेएम लिंगदोह के मुख्य चुनाव आयुक्त रहते यह प्रावधान किया गया था कि चुनाव लडने वाले प्रत्याशी नामांकन पत्र के साथ एक हलफनामा देंगे, जिसमें उनकी संपत्ति, उनकी शिक्षा और उनके आपराधिक मामलों का ब्योरा होगा। माना गया था कि लोग प्रत्याशियों की आपराधिक छवि के बारे में जानेंगे तो उनको वोट नहीं देंगे। लेकिन हुआ इसका उलटा। पिछले दो दशक में आपराधिक रिकार्ड वाले सांसदों की संख्या में बहुत बढ़ोतरी हो गई है। साथ की करोड़पति सांसदों–विधायकों की संख्या में भी रिकार्ड इजाफा हुआ है। तभी ऐसे प्रतीकात्मक चुनाव सुधार की जरूरत नहीं है।

पिछले कुछ दिनों से ऐसा कुछ चल रहा है, जिससे लग रहा है कि मतदान की प्रक्रिया में कुछ बड़े बदलाव होगा। यह कब होगा और कैसा होगा, यह नहीं कहा जा सकता है लेकिन चुनाव आयोग की ओर से उठाए जा रहे कदमों और केंद्र सरकार की ओर से दिए गए बयानों से इसे समझने की जरूरत है। इस लिहाज से दो बयान बहुत गौरतलब हैं। एक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का है और दूसरा उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू का है। दोनों ने नागरिकों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में मतदान करने की अपील की है। यह अपील बहुत आम है और दूसरी पार्टियों के नेता भी करते हैं, लेकिन वेंकैया नायडू ने एक कदम आगे बढ़ कर कहा है कि अगले लोकसभा चुनाव में 75 फीसदी मतदान होना चाहिए। ध्यान रहे पिछले चुनाव में 67 फीसदी से थोड़ा ज्यादा मतदान हुआ। सो, उप राष्ट्रपति ने पिछले चुनाव से आठ फीसदी ज्यादा और तीन–चौथाई मतदान की अपील की है।

यह संयोग है कि जिस समय उप राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने ज्यादा मतदान की अपील की उसी समय राष्ट्रीय मतदाता दिवस के मौके पर एक सर्वेक्षण जारी हुआ। एक पब्लिक ऐप के जरिए चार लाख लोगों का एक सैंपल सर्वे हुआ था, जिसमें 86 फीसदी लोगों ने कहा कि भारत में अनिवार्य मतदान होना चाहिए। उसके बाद से इस पर बहस चल रही है। इस बीच एक संसदीय समिति ने चुनाव आयोग से इस बात की पड़ताल करने को कहा है कि मतदान का प्रतिशत कम क्यों हुआ है। ध्यान रहे हाल में हुए पांच राज्यों के चुनाव में मणिपुर को छोड़ कर बाकी चारों राज्यों में मतदान प्रतिशत में कमी आई। पंजाब में तो मतदान 77 प्रतिशत से कम होकर 71 फीसदी पर आ गया। भाजपा नेता सुशील मोदी की अध्यक्षता वाले कानून व न्याय मंत्रालय की संसदीय समिति ने चुनाव आयोग से इसकी पड़ताल करने को कहा है। इससे जाहिर होता है कि भाजपा और केंद्र सरकार दोनों मतदान प्रतिशत को लेकर किसी न किसी तरह की उधेड़बुन में हैं। पश्चिम बंगाल के चुनाव नतीजों के बाद यह चिंता बढ़ी है क्योंकि हिंदू मतदाताओं के जबरदस्त ध्रुवीकरण के बावजूद भाजपा वहां 38 फीसदी ही वोट हासिल कर पाई। भाजपा का ऐसा मानना है कि अल्पसंख्यक मतदाता ज्यादा मतदान करते हैं और उसके मुकाबले हिंदू मतदाता वोट डालने कम संख्या में निकलते हैं। अगर उनका मतदान प्रतिशत बढ़ेगा तो भाजपा को उसका फायदा हो सकता है। अनिवार्य मतदान या मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उपायों पर चर्चा के बीच केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजीजू ने कहा है कि सरकार प्रवासी भारतीयों को ऑनलाइन मतदान की सुविधा देने पर विचार कर रही है। अगर ऐसा होता है तो यह बहुत बड़ा कदम होगा। ध्यान रहे अभी प्रवासी मतदाताओं को वोट डालने के लिए भारत आना पड़ता है। तभी बहुत कम प्रवासियों ने बतौर मतदाता खुद को भारत में पंजीकृत कराया है। दुनिया में दो करोड़ के करीब प्रवासी भारतीय हैं लेकिन मतदाताओं की संख्या सिर्फ एक लाख है। अगर सरकार ऑनलाइन मतदान का प्रावधान करे तो उनकी संख्या बहुत बढ़ेगी। ध्यान रहे अभी इलेक्ट्रोनिक पोस्टल बैलेट भेज कर चुनाव कराने का प्रस्ताव आया हुआ है। विपक्षी पार्टियां इसका विरोध कर रही हैं। इलेक्ट्रोनिक पोस्टल बैलेट कलेक्ट करके भारत भेजने की जिम्मेदारी दूतावासों और उच्चायोगों को देने की बात है, जिसका उन्होंने भी विरोध किया है। उनका कहना है कि इसके लिए दूतावासों और उच्चायोगों का बुनियादी ढांचा सुधारना होगा और कर्मचारियों की संख्या बढ़ानी होगी। सोचें, अगर प्रवासियों को इलेक्ट्रोनिक बैलेट से या ऑनलाइन मतदान की सुविधा मिलती है तो उसका फायदा किसको होगा? कहने की जरूरत नहीं है कि प्रवासी भारतीयों के बीच भाजपा और नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता किसी दूसरी पार्टी या नेता के मुकाबले बहुत ज्यादा है।

इसी तरह चुनाव आयोग पोस्टल बैलेट से मतदान और घर बैठे मतदान का दायरा बढ़ा रहा है। पहले सैनिकों और चुनाव प्रक्रिया में शामिल लोगों को ही पोस्टल बैलेट से मतदान की अनुमति थी। लेकिन अब बीमार और 80 साल से ज्यादा उम्र के बुजुर्गों को भी घर बैठे मतदान की सुविधा मिली है। आने वाले दिनों में इसमें कुछ और समूह जोड़े जा सकते हैं, जिनको घर बैठे मतदान की सुविधा मिलेगी। कई विपक्षी पार्टियां इस व्यवस्था को लेकर आशंकित हैं और उनको लग रहा है कि सत्तारूढ़ पार्टी इसका अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर सकती है। ध्यान रहे संवैधानिक संस्थाओं के कामकाज में जैसा पूर्वाग्रह हाल के दिनों में देखने को मिला है उसे देखते हुए किसी किस्म के दुरुपयोग की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। एक और सुधार श्वन नेशन, वन इलेक्शनश्च का प्रस्तावित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अनेक बार इसके बारे में बात कर चुके हैं और संसद के चालू सत्र में पिछले हफ्ते राज्यसभा में यह मुद्दा उठा। भाजपा के सांसद डॉक्टर डीपी वत्स ने बजट सत्र के दौरान यह मुद्दा उठाया और कहा कि इस समय देश में श्एक राष्ट्र, लगातार चुनावश्च की स्थिति हो गई। उन्होंने सभी दलों से एक साथ चुनाव पर सहमति बनाने की अपील की। चुनाव आयोग ने पूरे देश के लिए एक मतदाता सूची बनाने का ऐलान करके इस दिशा में एक ठोस पहल की है। लेकिन एक साथ पूरे देश में संसद, विधानसभा और स्थानीय निकाय चुनाव कराने का फैसला चुनाव आयोग नहीं कर सकता है और सिर्फ सत्तारूढ़ दल भी नहीं कर सकता है। इस पर सभी पार्टियों और राज्यों की सरकारों के साथ सहमति बनानी होगी। अभी जिस तरह से भारत में सारे चुनाव राष्ट्रपति मॉडल पर लड़े जा रहे हैं और गैर भाजपा दलों को हर चुनाव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ लडना पड़ रहा है उसे देखते हुए लग रहा है कि अगर पूरे देश में एक साथ चुनाव हुए तो उसका फायदा भी भाजपा को होगा।

रुद्रपुर में टेक होम राशन यूनिट स्थापित, अप्रैल से होगी चालू

देवरिया। आंगनबाड़ी केंद्रों को पुष्टाहार आपूर्ति करने के लिए जिले के रुद्रपुर में भी टेक होम राशन यूनिट की स्थापना कर दी गई है। अप्रैल माह में इस यूनिट के चालू होने की बात कही जा रही है। यूनिट के चालू होने के बाद रुद्रपुर समेत अन्य नजदीक के ब्लाकों में पुष्टाहार की आपूर्ति की जाएगी। हालांकि अभी बाल विकास पुष्टाहार विभाग की तरफ से इस यूनिट को एडवांस रुपया पुष्टाहार आपूर्ति के लिए नहीं दिया गया है। आंगनबाड़ी केंद्रों पर नौनिहालों के लिए पुष्टाहार दिया जाता है। अभी तक यह पुष्टाहार गैर जनपद से तैयार होकर जिले में आता रहा है। अब जिले में ही पुष्टाहार तैयार किया जाएगा। जिले के पांच ब्लाकों में टेक होम राशन यूनिट की स्थापना पहले चक्र में होनी है। जिसमें से भाटपाररानी के भिगारी बाजार व रुद्रपुर में इस यूनिट की स्थापना कर दी गई है। जबकि भागलपुर, देवरिया व गौरीबाजार में यूनिट स्थापना का कार्य चल रहा है। खास बात यह है कि इस यूनिट में काम करने वाली महिलाएं स्वयं सहायता समूह से जुड़ी होंगी और उन महिलाओं को हर माह आठ हजार रुपये मानदेय दिया जाएगा। इन महिलाओं को यूनिट चलाने के लिए प्रशिक्षित किया जा चुकी है। भिगारी बाजार की यूनिट को तो बाल विकास पुष्टाहार विभाग की तरफ से 59 लाख रुपये एडवांस भी दिया जा चुका है। इस संबंध में डीसी एनआरएलएम विजय शंकर राय ने बताया कि दोनों यूनिट अप्रैल माह में चालू करने की योजना है। इसका खाका तैयार कर लिया गया है। जबकि अन्य तीनों यूनिट भी जल्द ही चालू हो जाएंगी।

हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा में अनुपस्थित रहे 1499 छात्र

महराजगंज। यूपी बोर्ड की परीक्षा के छठवें दिन प्रथम पाली में हाईस्कूल के वाणिज्य और द्वितीय पाली में हाईस्कूल की सिलाई व इंटर की अंग्रेजी की परीक्षा में कुल 1499 छात्र परीक्षा से अनुपस्थित रहे। उधर दोपहर बाद कई जिलों में अंग्रेजी का पेपर लीक होने के बाद जिले के परीक्षा केंद्रों की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। पूर्णतरु कड़ी सुरक्षा के बीच जिले में शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षा संपन्न हुआ। जिला विद्यालय निरीक्षक अशोक कुमार सिंह ने बताया कि प्रथम पाली में हाईस्कूल के वाणिज्य में कुल पंजीकृत 104 छात्रों में से 100 छात्र उपस्थित हुए और चार अनुपस्थित रहे। इसी प्रकार दूसरी पाली में हाईस्कूल की सिलाई में पंजीकृत दो में से दोनों उपस्थित रहे, जबकि इंटर की अंग्रेजी में पंजीकृत 24423 में से 22923 छात्र ही उपस्थित हुए शेष 1495 छात्र परीक्षा से अनुपस्थित रहे। तीनों विषयों की हुई परीक्षा में हाईस्कूल और इंटर के 1499 छात्रों ने परीक्षा छोड़ दी।

एक आटो में 13 सवारियां

महराजगंज। मानक से अधिक सवारियां बैठाकर यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले आटो चालकों पर यहां कोई रोक टोक नहीं है। ये न सिर्फ एक बार में 13 लोगों तक बैठाते हैं बल्कि सड़क पर कहीं भी वाहन रोककर सवारी बैठाना इनके लिए आम बात है। इनकी लापरवाही कई बार गंभीर दुर्घटना की वजह बनती है। इससे हुई दुर्घटनाओं से चार महीने में चार लोगों की मृत्यु हो चुकी है। नौतनवां कस्बे की बात करें तो सोनौली, ठूठीबारी, कोल्हुई व खनुआ रूट पर सैकड़ों आटो का संचालन होता है। लेकिन सख्ती नहीं बरतने के कारण वह 13 सवारियां तक भर लेते हैं। बीच में आठ, चालक के साथ तीन व सामान रखने की जगह दो से तीन लोगों को बैठे हुए देखा जा सकता है। घंटाघर स्थित पुलिस सहायता केंद्र पर अक्सर पुलिसकर्मियों की तैनाती रहती है, लेकिन वह भी मूक दर्शक बने रहते हैं। 23 दिसंबर 2021 में गोरखपुर–सोनौली राष्ट्रीय राजमार्ग के गजरजोत चौराहे पर टैंकर व आटो की भिड़ंत में घायल महिला नंदनी की इलाज के दौरान गोरखपुर मेडिकल कालेज में मृत्यु हो गई थी। वह अपने पति व बच्ची के साथ ससुराल नेपाल जा रही थी। 19 मार्च को सोनौली से गोरखपुर जा रहे ट्रक से धौरहरा तिराहा बाईपास पर आटो की भिड़त हो गई। इसमें आटो में सवार संतोष मैथ्यू निवासी कौली चिरइल एव बैम्बुआ पैथाऊर कल्लूर (केरल), सुभाष निवासी भैरहवा नेपाल व चार वर्षीय बालिका सोनौली निवासी की मृत्यु हो गई। मंजू कुर्मी व परमशीला निवासी जिला रूपन्देही नेपाल गंभीर रूप से घायल हो गई थीं। कोमल प्रसाद मिश्र, सीओ नौतनवा ने बताया कि यातायात नियमों का अनुपालन कराने के लिए अभियान चलाया जाएगा। नियमों को तोड़ने वालों पर कार्रवाई की जाएगी।

गोदाम पर ताला, बीज के लिए किसान परेशान

महराजगंज। सरकार भले ही किसानों को पर्याप्त खाद–बीज उपलब्ध कराने का दावा कर रही हो पर जमीनी हकीकत काफी अलग है। हाल यह है कि दलहन व तिलहन की कटाई के बाद जायद फसलों बोआई के खास समय पर भी राजकीय बीज गोदामों पर ताला लटक रहा है। किसानों को मजबूरन निजी दुकानदारों के हाथों लुटना पड़ रहा है। जिले के 12 ब्लाक क्षेत्रों में ब्लाक स्तर पर एक–एक राजकीय कृषि बीज भंडार केंद्र स्थापित है। किसानों को रबी, खरीफ व जायद के फसलों के लिए समय पर बीज और अन्य सेवाएं मिलती रहें, इसके लिए समय–समय पर दिशा निर्देश दिया जाता रहता है। लेकिन बावजूद इसके मनमानी के कारण किसानों को बहुउपयोगी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता है। राजकीय कृषि बीज भंडार सदर महराजगंज पर ताला लटका मिला। केंद्र के बरामदे में तार बाइक व एक साइकिल खड़ी मिली लेकिन कोई कर्मचारी नजर नहीं आया। बीज गोदाम के समीप मिले बागापार के किसान रमेश, बौलिया के विजय कुमार, रामचन्द्र, अवधेश, और गोनरिया बाबू के राजीव ने बताया कि सरसो की फसल कटने के बाद जायद की फसल के लिए मूंग, आदि की बीज की जरूरत थी, लेकिन गोदाम बंद है। कई दिनों से यहां आ रहे हैं, कभी खुलता भी है तो कर्मचारी बीज न होने की बात कहते हैं। यह हाल सिर्फ सदर का नहीं जिले में स्थापित लगभग सभी केंद्रों का यही हाल है। जिला कृषि अधिकारी वीरेंद्र कुमार ने बताया कि राजकीय कृषि बीज भंडार नियमित खुलने का निर्देश है। सभी केंद्रों पर जायद के बीज भी भेजे गए थे। अगर कहीं लापरवाही पाई जाएगी तो जांच कर कार्रवाई होगी।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने डेयरियों का किया औचक निरीक्षण, लिए सैंपल

हरदोई। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग हरदोई के सहायक आयुक्त खाद्य सतीश कुमार के निर्देशन में अजीत सिंह सुरक्षा खाद्य अधिकारी द्वारा अभीसूचना के आधार पर पिहानी स्थित शब्बीर डेयरी पिहानी के प्रतिष्ठान पर औचक छापेमारी करके मिश्रित दूध का एक सैंपल संग्रहित कर जांच हेतु खाद्य प्रयोगशाला भेजा जा रहा है जांच रिपोर्ट प्राप्त होने पर संबंधित डेरी पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। दूध एवं अन्य खाद्य पदार्थों पर नियमित रूप से निरीक्षण के निर्देश समस्त का सुरक्षाखाद्यअधिकारियों को दिए गए हैं दूध एवं अन्य खाद्य पदार्थों में मिलावट की शिकायत कृपया निम्न नंबर पर दे सकते हैं मोबाइल नंबर 74 1799 1605।

लूटकांड में दो बदमाश गिरफ्तार, एक को भेजा गया जेल

देवरिया। कैश मैनेजमेंट एजेंसी सीएमएस इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड के कैश वैन कस्टोडियन प्रभुनाथ पांडेय को सोमवार को गोली मारकर 30 लाख रुपये लूटने के प्रयास के मामले में पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली है। पुलिस ने घटना में शामिल घायल बदमाश शिवम सिंह के दो अन्य साथियों को गिरफ्तार कर लिया। एक बदमाश को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया। पुलिस दूसरे से पूछताछ कर रही है। सुरक्षाकर्मी की गोली से घायल बदमाश शिवम सिंह को घटनास्थल पर ही पकड़ लिया गया था। पुलिस की विवेचना में शिवम सिंह के अलावा तीन बदमाशों के नाम सामने आए हैं। इसमें गोरखपुर के गीडा थानाक्षेत्र के गाहासाड गांव निवासी जन्मेजय सिंह को देवरिया शहर के पुरवा के समीप से गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। दूसरे बदमाश गोरखपुर के पीपीगंज निवासी पुरुषोत्तम जायसवाल को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार पूछताछ में उसने घटना से जुड़ी अहम जानकारी दी है। उधर, बीआरडी मेडिकल कालेज गोरखपुर में भर्ती बदमाश शिवम सिंह के बाएं घुटने का आपरेशन कर गोली निकाल दी गई है। न्यायिक मजिस्ट्रेट अंकित राज सिंह ने बीआरडी मेडिकल कालेज गोरखपुर पहुंचकर शिवम के बारे में पुलिस के प्रपत्रों का अवलोकन करने के बाद उसे न्यायिक अभिरक्षा में लेने का आदेश दिया। कस्टोडियन प्रभुनाथ का भी मेडिकल कालेज में उपचार चल रहा है। बदमाशों को पल–पल की मिल रही थी सूचनाः पुलिस की पूछताछ में कई चौंकाने वाली जानकारी मिली है। पकड़े गए बदमाशों ने पुलिस को बताया कि घायल कस्टोडियन के साथ का एक व्यक्ति शिवम सिंह से मोबाइल पर संपर्क में था। जो घटना को अंजाम देने में मदद कर रहा था। पुलिस ने उस व्यक्ति को हिरासत में ले लिया है। उससे पूछताछ कर रही है। एक बदमाश के कोतवाली में सरेंडर करने की चर्चाः पुलिस ने जिन दो बदमाशों को गिरफ्तार करने का दावा किया है, उनमें से एक के कोतवाली में पहुंचकर सरेंडर करने की चर्चा है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, दोपहर में एक बजे बदमाश कोतवाली पहुंचा और खुद के घटना में शामिल होने की बात कही। बताया कि वह बस से देवरिया पहुंचा और फिर सीधे कोतवाली पहुंचा। उसे एनकाउंटर का डर था। एक आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। गिरफ्तार दूसरे बदमाश से पूछताछ की जा रही है। जल्द ही घटना का पर्दाफाश किया जाएगा।

गेहूं खरीद में किसानों को असुविधा हुई तो होगी कार्रवाई

देवरिया। विकास भवन के गांधी सभागार में गेहूं खरीद को लेकर जिलाधिकारी आशुतोष निरंजन ने अधिकारियों व कर्मियों के साथ बैठक की। जिलाधिकारी निरंजन ने कहा कि क्रय केंद्रों पर किसानों की हर सुविधाओं का ख्याल रखा जाए। गेहूं खरीद के दौरान किसानों को किसी प्रकार की असुविधा हुई तो कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जिले में 87 क्रय केंद्र बनाए गए हैं। सभी केंद्रों को जियो टैगिंग करा दी गई है। इसमें 15 क्रय केंद्र खाद्य विभाग, 24 क्रय केंद्र पीसीएफ, 17 क्रय केंद्र यूपीएसएस, 30 क्रय केंद्र पीसीयू और एक क्रय केंद्र भारतीय खाद्य निगम का है। इसके अलावा 45 अतिरिक्त क्रय केंद्र प्रस्तावित किया गया है। सभी क्रय केंद्रों पर प्रभारियों की तैनाती कर दी गई है। क्रय केंद्रों पर रखे जाने वाले अभिलेख स्टाक रजिस्टर, बोरा रजिस्टर, क्रय पंजिका, निरीक्षण पंजिका, रजिस्ट्रेशन पंजिका आदि तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं। एक अप्रैल से खरीदारी की जाएगी। किसानों के गेहूं का मूल्य का भुगतान आधार लिंक बैंक खाते में ही किया जाएगा। गेहूं खरीद के लिए आनलाइन पंजीकरण किया जा रहा है। गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2025 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी रवींद्र कुमार, एडीएम वित्त एवं राजस्व नागेंद्र सिंह समेत अन्य मौजूद रहे। कम पंजीकरण पर जताई नाराजगीः जिलाधिकारी आशुतोष निरंजन ने रबी विपणन वर्ष 2022–23 के लिए खाद्य विभाग द्वारा किए जा रहे आनलाइन पंजीकरण की कम संख्या पर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताई। उन्होंने पीसीएफ, पीसीयू, यूपीएसएस के प्रभारी अधिकारियों से स्पष्टीकरण तलब किया है। जवाब संतोषजनक न मिलने पर कार्रवाई की चेतावनी दी है।

शार्ट सर्किट से गुमटी में लगी आग, क्षति

महराजगंज। स्थानीय नगर के जयहिंद चौराहे पर रात दो बजे शार्ट सर्किट से आग लगने से गुमटी जल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बिजली कटवाई और फायर ब्रिगेड टीम ने काफी मशक्कत कर आग पर करीब एक घंटे में काबू पा लिया। दुकानदार दिनेश कसौधन ने बताया कि जयहिंद चौराहे के जयप्रकाश नगर वार्ड में गुमटी में चाउमीन व मोमो बेचते हैं। रात नौ बजे दुकान बंद कर महेंद्र नगर वार्ड स्थित घर पर चले आए। रात दो बजे सूचना मिली कि दुकान में आग लग गई है तो दौड़कर पहुंचा, तब तक सब कुछ जलकर राख हो चुका था। उन्होंने बताया वही दुकान उनके रोजी–रोटी का मुख्य साधन था। इसमें करीब 16 हजार रुपये की क्षति हुई है। इंस्पेक्टर राजेश कुमार पांडेय ने बताया कि समय से आग पर काबू कर लिया गया। बृजमनगंज थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत लेहड़ा के लोहरौली में एक झोपड़ी में रात में आग लग जाने से सारा सामान जलकर राख हो गया। लोहरौली निवासी सुधा देवी आवासीय झोपड़ी में रात खाना बना रही थी अचानक गैस लीक होने से आग पकड़ लिया तथा धीरे–धीरे आग पूरे झोपड़ी में फैल गई। मौजूद लोग जान बचाकर बाहर निकल गए। स्थानीय नगर पालिका सिसवा बाजार के वार्ड नंबर पांच के गांधी नगर, अमडीहा में देर रात आग लगने से चार पशुओं की जलकर मौत हो गई। वहीं एक महिला व युवक पशुओं को बचाने में घायल हो गए, जिनका उपचार सिसवा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर कराया गया। स्थानीय लेखपाल से मौका मुआयना कराकर क्षतिपूर्ति की मांग की गई है।

एक हफ्ते के अंदर स्वीकृत कराएं डीपीआर

महराजगंज। जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में परफार्मेंस ग्रांट की समीक्षा बैठक हुई। जिलाधिकारी ने परफार्मेंस ग्रांट योजना के अंतर्गत चयनित 14 ग्राम पंचायतों के ग्राम प्रधानों, सचिवों व तकनीकी सहायकों से बिदुवार जानकारी ली। जिलाधिकारी ने परफार्मेंस ग्रांट योजना के संदर्भ में निर्देश देते हुए कहा कि योजना के अंतर्गत अवशेष परियोजनाओं का डीपीआर एक हफ्ते के अंदर तैयार कर उनको स्वीकृत कराएं। उन्होंने तकनीकी अधिकारियों को मौके पर जाकर कार्यों को सत्यापित करने और सत्यापन के बाद ही आगे कार्य कराने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने नोडल अधिकारियों द्वारा संबंधित गांवों का नियमित निरीक्षण न करने पर सख्त नाराजगी व्यक्त करते हुए नियमित निरीक्षण का निर्देश दिया, ताकि कार्यों को नियमानुसार सुनिश्चित कराया जा सके। जिलाधिकारी ने टेंडर में विलंब पर नाराजगी व्यक्त की और शीघ्र टेंडर जारी करने और टेंडर खुलवाने का निर्देश दिया। कहा कि आफलाइन टेंडर नियमानुसार हो और अधिक से अधिक प्रतियोगियों को टेंडर के लिए आमंत्रित किया जाए।

उन्होंने टेंडर खुलने के तुरंत बाद से कार्य शुरू करने का निर्देश दिया। ठेकेदारों द्वारा कार्यों को लेकर लापरवाही की शिकायत मिलने पर जिलाधिकारी ने ऐसे ठीकेदारों को नोटिस जारी कर, ब्लैकलिस्ट करने की कार्यवाही शुरू करने का निर्देश दिया। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि कार्यों में विलंब की दशा में दंडात्मक कटौती का प्रावधान शामिल किया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि यह योजना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस लिए योजना के अंतर्गत स्वीकृत कार्यों को पूरी पारदर्शिता के साथ कराना सुनिश्चित करें। बैठक में अनुपस्थित तकनीकी अधिकारी व सहायकों के वेतन को जिलाधिकारी द्वारा अग्रिम आदेश तक बाधित करने का निर्देश दिया। मुख्य विकास अधिकारी गौरव सिंह सोगरवाल, परियोजना निदेशक राजकरन पाल, डीसी मनरेगा अनिल चौधरी, डीपीआरओ केबी वर्मा समेत सभी नोडल अधिकारी, ग्राम सचिव, तकनीकी अधिकारी व ग्राम प्रधान उपस्थित रहे।

सोनौली पुलिस द्वारा वाहनों की हुई सघन जांच- कई वाहनों का हुआ चालान

दैनिक बुद्ध का संदेश
सोनौली/महराजगंज। भारत से नेपाल आने जाने वाले वाहनों की

सोनौली बॉर्डर के सोनौली प्राइवेट बस स्टैंड पर पुलिस कप्तान के निर्देश पर सोनौली पुलिस ने वाहन चेकिंग अभियान चलाया। बताते चले कि गुरुवार की दोपहर को चौकी प्रभारी सोनौली अभिषेक सिंह ने अपने पूरे दलबल के साथ सोनौली प्राइवेट स्टैण्ड के पास भारत से नेपाल आने जाने वाले छोटे बड़े सभी वाहनों की सघन जांच किया। भारत से नेपाल की तरफ जाने वाले दो पहिया वाहन चालकों के हेलमेट के साथ वाहनों के कागजात की जांच की गई और वहीं चार पहिया वाहन के डिक्की की भी जांच की गई मौके पर बिना हेलमेट के बाइक चलाने वाले लोगों को कड़ी चेतावनी देते हुए जुर्माना भी वसूला गया।

पांच से शुरू होगी जंगल सफारी, चल रही तैयारी

महराजगंज। सोहगीबरवा वन्य जीव प्रभाग की अद्भुत छटा और प्रकृति का विहंगम दृश्य देखने के लिए जंगल सफारी की शुरूआत पांच अप्रैल से हो रही है। जिला प्रशासन ने इसको लेकर लगभग सभी प्रकार तैयारियां पूरी कर ली हैं। पांच अप्रैल से पूर्व जिला प्रशासन द्वारा जारी दोनों सर्किट पर ड्राइ रन किया जाएगा।

जंगल सफारी में लगने वाले आठ मार्गदर्शकों को भी प्रशिक्षित किया जाएगा। जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि सोहगीबरवा वन्य जीव प्रभाग वन्य जीवों एवं वनस्पतियों के मामले में सबसे समृद्ध जंगल है। यहां की वन संपदा के साथ–साथ यहां के प्राकृतिक दृश्य व वन्य जीवों को देखने के लिए यहां जंगल सफारी की शुरूआत हो रही है। इसमें गौतम बुद्ध से संबंधित रामग्राम और देवदह को भी जंगल सफारी के रूट से जोड़ा गया है। जहां पर्यटक पहुंचकर प्रकृति के मनोरम दृश्य का लुत्फ उठा सकेंगे।

साथ ही जब जंगल सफारी को लेकर लोग जंगल में पहुंचेंगे तो जंगल की सुरक्षा होगी और कटान पर रोक लग सकेगा। पांच अप्रैल को प्रथम दिवस दो गाड़ियों से इसकी शुरूआत की जा रही है। इन रूटों पर होगा जंगल सफारीः महराजगंज। पहला रूट दक्षिणी चौक रेंज के चौक से प्रवेश कर कुशमहवां बीट, ट्राम वे चौराहा के बाद 24 वनटांगियां नर्सरी के बाद मधवलिया तक पहुंचेगी। जहां से पुनरू वापस चौक से ही बाहर निकाला जाएगा। इसी प्रकार दूसरा रूट उत्तरी चौक रेंज में बरगदवा मेन रोड से प्रवेश कर गणेशपुर, देइमर के बाद सिगरहना ताल में प्रवासी पक्षियों का कलरव देखने को मिलेगा।

पर्यटकों के लिए हुआ शुल्क का निर्धारणः जिलाधिकारी ने बताया कि दोनों रूटों पर जंगल के भीतर सेंचुरी क्षेत्र में पर्यटन के लिए शुल्क का निर्धारण किया गया है। प्रत्येक रूट पर एक राउंड के सफर के लिए कुल 1560 रुपये पर्यटकों को भुगतान करना होगा। एक गाड़ी में एक मार्गदर्शक समेत छह लोगों के बैठने की व्यवस्था रहेगी

प्रधान प्रतिनिधि ने बच्चों को मैडल पुरस्कार दे कर किया सम्मानित

दैनिक बुद्ध का संदेश
विषखोप/नौतनवां। ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत विषखोप मे स्थित

उच्च प्राथमिक विद्यालय में पुरातन छात्र अभिभावक वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का हुआ आयोजन कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती पूजा वंदना के साथ ग्राम प्रधान प्रतिनिधि के द्वारा किया गया उसके बाद विद्यालय के बच्चों ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत गीत प्रस्तुत कर किया। और विद्यालय मे सर्वोच्च अंक लाने वाले बच्चे कुलदीप चौधरी कक्षा 8 को गोल्ड मैडल,पवन चौधरी सिल्वर मेडल पवन कुमार गुप्ता ब्रान्ज मेडल कक्षा 7 में अर्चना चौधरी गोल्ड मेडल प्रिया चौधरी सिल्वर मेडल अमरनाथ चौधरी ब्रॉन्ज मेडल कक्षा 6 से विकास गोल्ड मेडल विशाल सिल्वर मेडल बनवारी ब्रॉन्ज मैडल प्राप्त किया कक्षा 6 के विकास ने विद्यालय में सर्वोच्च अंक पाकर टॉप पर रहे आशा गौड़ आशा भारती करीना भारती की सांस्कृतिक कार्यक्रम में सांत्वना पुरस्कार दिया गया। वही कार्यक्रम का संचालन चन्द्रभान प्रसाद ने किया कार्यक्रम में ममता सिंह अजय कुमार गनेश कुमार प्रदुम्मन चौधरी सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

अपराध पर नियंत्रण रखना मेरी पहली प्राथमिकता:दिलीप पांडेय

दैनिक बुद्ध का संदेश
गोलाबाजार/गोरखपुर। जनपद के दक्षिणांचलमे स्थित गोला कोतवाली का कार्यभार जिला पुलिस मुखिया के आदेश पर बुधवार को नवागत गोला थाना प्रभारी निरीक्षक दिलीप कुमार पांडेय पहुच कर बिधिवत पद भार ग्रहण कर लिया। पदभार ग्रहण करने के उपरांत गुरुवार को स्थानीय पत्रकारों से रुबरू होते हुए कहा कि जिला पुलिस मुखिया ने जिस आशा व विश्वास के साथ मुझे यहां का कार्यभार सौपा है उसे बखूबी निर्वहन करने का कार्य करूँगा। क्षेत्र में अपराध व अपराधियो पर नियंत्रण रखना मेरी पहली प्राथमिकता में होगा। शासन के दिशा निर्देशों का पालन होगा। क्षेत्र के पीड़ित लोगो को न्याय दिलाने का भरपूर प्रयास करूँगा। आगे उन्होंने बताया कि सिद्धार्थनगर जनपद के मुल निवासी है, उनका चयन उत्तर प्रदेश पुलिस में सन् 2001 बतौर एस आई पद पर हुआ था। इस जनपद में मेरा यह तीसरा थाना है। इसके पूर्व वे जनपद के ही बेलीपार थाने पर बतौर थाना प्रभारी तैनात थे। सनद रहे कि गोला थाने पर तैनात प्रभारी निरीक्षक राहुल कुमार सिंह का स्थानांतरण गीडा थाना प्रभारी के पद पर हो गया है। उनकी जगह गोला थाने की कमान जिला पुलिस मुखिया ने पांडेय को सौप दिया है।

श्री राम कथा के अष्टम दिवस में राज्याभिषेक की तैयारी

राजा दशरथ द्वारा कैकई को दिए गए दो वरदान के बाबत कैकई का को भवन जाना

दैनिक बुद्ध का संदेश

रावट्‌र्सगंज/सोनभद्र। वाराणसी शक्तिनगर मार्ग पर स्थित मधुपुर बाजार के उत्तरी छोर पर मानस प्रवक्ता साध्वी ऋचा शुक्ला रामलीला मैदान में नव दिवसीय श्रीराम कथा में अष्टम दिवस पर भगवान श्री राम के राज्याभिषेक की तैयारी में राजा दशरथ द्वारा राजाज्ञा जारी होते ही देवताओं के राजा इंद्र के हृदय में खलबली मच गई। भगवान श्री राम का राज्याभिषेक न हो, इसके लिए इंद्र भागते हुए ब्रह्मा जी के पास जाकर विनय करते हुए कहते हैं कि प्रभु भगवान श्री राम का राज्याभिषेक हो जाएगा तो हम लोगों का क्या होगा। इस पर ब्रह्मा जी ने इंद्र से कहा तुम्हारा विचार ठीक नहीं है। इस पर इंद्र ने ब्रह्मा जी से कहा कि प्रभु दुष्ट दमन कार्य रुक जाएगा। प्रभु श्री राम का दुष्ट दमन कार्य हेतु ही अवतार हुआ है। इस पर ब्रह्मा जी ने कहा कि तब तो ठीक है, लोक कल्याण हेतु कुछ भी किया जा सकता है। इसके बाद ब्रह्मा जी ने इंद्र से पूछा हमें क्या करना होगा। इस पर इंद्र ने कहा प्रभु माता सरस्वती ही अयोध्या की रानी कैकेई की दासी मंथरा है, जिसके विचारों को माता सरस्वती ही बदल सकती हैं। माता सरस्वती यदि मंथरा के जिह्वा पर जाकर बॉस कर कल्याणकारी कार्य हेतु प्रेरित करें। जिससे जनकल्याण हो सकता है। इसके बाद माता सरस्वती ने जन कल्याण हेतु कार्य प्रारंभ कर दिया। जिसके तहत मंथरा ने कैकई को सलाह दिया कि श्री राम को राजगद्दी होते ही माता कौशल्या का सम्मान बढ़ जाएगा। और आप दासी की श्रेणी में आ जाएंगी। इतना सुनते ही कैकेई का विचार बदल जाता है। कैकेई ने कहा तब हमें क्या करना चाहिए ? माता सरस्वती की प्रेरणा से दासी मंथरा ने कहा कि आप महाराज दशरथ से कहिए भरत का राज्याभिषेक करें। और भगवान श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास दे। इसके बाद दासी मंथरा ने रानी कैकेयी को याद दिलाया कि एक बार राजा दशरथ ने तुम्हें दो वरदान देने को कहे थे। वह बाकी है। यही वह अवसर है कि आप वह दोनों वरदान तुरंत मांग ले। मंथरा की यह बात सुनते ही कैकेयी तुरंत कोप भवन चली जाती हैं। यह जानकारी होते ही राजा दशरथ कोप भवन जाकर रानी को कोप भवन आने का कारण पूछने पर कैकई ने कहा कि आपने हमें दो वरदान देने को कहे थे वह आज ही हमें दे दीजिए। इस पर राजा दशरथ ने कहा कि यह कौन बड़ी बात है, दो नहीं चार वरदान मांग लो। इस पर रानी कैकेयी ने फिर कहा नहीं हमें मात्र दो ही वरदान देने को कहे थे वह पुनः दोहराइए, इस पर राजा दशरथ ने कहा कि, रघुकुल रीति सदा चली आयी। प्राण जाए पर वचन न जायी। इस पर रानी कैकई ने कहा कि तब सुनिए महांराज पहला वरदान भरत को राजतिलक, दूसरा श्री राम को 14 वर्ष का वनवास, इतना सुनते ही राजा दशरथ मूर्छित होकर कोप भवन में ही धरती पर गिर पड़े।

ट्रेन के चपेट में आने से 70 वर्षीय महिला की मौत

दैनिक बुद्ध का संदेश

करमा/सोनभद्र। करमा थाना क्षेत्र के करमा गाव के समीप मिर्जापुर की तरफ से आ रही मालगाड़ी के चपेट में आने से वृद्ध महिला की मौत हो गयी।प्राप्त जानकारी के अनुसार करमा थाना क्षेत्र के खैरवा निवासी गुलाबी 70 वर्ष पत्नी छागुर ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गयी। मृतका के नाती दीपक ने बताया कि मृतका आर्यावर्त बैंक करमा किसी काम से गयी थी घर वापस होते समय वह ट्रेन की चपेट मे आ गयी। वृहस्पतिवार को दोपहर लगभग 12बजे मालगाडी मिर्जापुर की तरफ से चोपन की तरफ जा रही थी उसकी चपेट मे आ गयी। राहगीरों ने उक्त महिला को देखा तो उसकी सूचनापुलिस एवं परिजनों को दी। मौके पर पहुँचे उपनिरीक्षक रुपेश कुमार सिंह ने शव को कब्जे में लेकरअग्रिम कार्रवाही में जुट गए रेलवे स्टेशन मास्टर खैराही ने बताया कि माल गाड़ी के ड्राइवर ने स्टेशन को सूचना दी। जिस पर की मैन एवं जे, ई, प्रतीक कुमार पांडे घटनास्थल पर कर शव को रेलवे ट्रैक से हटा कर पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुँच कर अग्रिम कार्यवाही में जुट गयी।

सिलाई कढ़ाई के माध्यम से किशोरियां बनेंगी आत्मनिर्भर

.लड़कियों एवं महिलाओं के लिये खोला सिलाई प्रशिक्षण केंद्र

दैनिक बुद्ध का संदेश

नौतनवां/महराजगंज जिले के नौतनवां ब्लाक क्षेत्र मे की दिव्यांग जन किशोरियों और युवतियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सामाजिक संस्था पूर्वांचल ग्रामीण सेवा समिति, शाखा–नौतनवां के तत्वाधान में मानोस युनिडास के सहयोग से प्रयास कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम पंचायत खैराटी में सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र खोला गया है। वृहस्पतिवार को खैराटी दिव्यांग जन सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का उद्‌घाटन ग्राम प्रधान प्रतिनिधि महेंद्र यादव एवं पी एस एस के सहायक निदेशक फादर मैथ्युस ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस अवसर पर प्रधान प्रतिनिधि महेंद्र यादव ने कहा कि देश के विकास में पुरुष के साथ ही महिलाओं की भी बराबर की हिस्सेदारी है। महिलाएं अगर स्वावलंबी बनीं तो वे न केवल अपने परिवार की आर्थिक उन्नति का आधार बन जाएंगी, बल्कि उनके भीतर स्वाभिमान भी पैदा होगा। और हम बहुत ही इससे खुश हैं और पी जी एस एस को इस पुनीत कार्य के लिए धन्यवाद देना चाहते है। कार्यक्रम प्रबंधक अब्दुल हमीद ने बताया कि पी जी एस एस तीन दशक से बच्चों, किशोरियों और महिलाओं के लिए शिक्षा, अधिकार और स्वावलम्बन के लिए काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में नौतनवां ब्लाक के कुछ और गांवों में प्रशिक्षण केन्द्र खोलेंगे, जिससे इन क्षेत्र की दिव्यांग किशोरियां लाभान्वित हो सके। मुख्य अतिथि फादर मैथ्युस ने कहा कि सिलाई एक ऐसा हुनर है, जिससे महिला घरेलू कामकाज के दौरान बचने वाले थोड़े से समय का सदुपयोग कर अपने और अपने परिवार का भविष्य बेहतर बना सकती हैं। याद रखना है कि हमेशा आगे चलने वाले ब्यक्ति का ही नाम होता है। कार्यक्रम के जिला समन्वयक श्रवण कुमार ने बताया कि महिलाओं को पढ़ाई लिखाई की तरफ रुझान बढ़ाना होगा। इसके बाद उन्हें स्वरोजगार की तरफ ध्यान देना चाहिए। महिलाएं जब तक पुरुषों के बराबर प्रयास नहीं करेंगी, तब तक देश आगे नहीं बढ़ सकता है। दिव्यांग जन को उनके नाम से बुलाना है, न कि विकलांगता से। मुख्य प्रशिक्षक पुष्पा देवी ने सिलाई कार्य के दौरान बरती जाने वाली जरुरी सावधानियों के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन सुनील कुमार ने किया। इस अवसर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ती सिल्पी एवं दिव्यांग किशोरी एवं महिला लोग शामिल रहे।

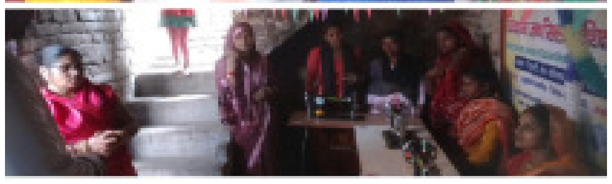

जिलाधिकारी सोनभद्र भ्रष्टाचार के मामले में हुए सस्पेंड

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। खनन, जिला खनिज न्यास समिति में अनियमितता विधानसभा चुनाव में लापरवाही बरते जाने के आरोप में जिलाधिकारी टी0के0 शिबू निलंबित किये गये। विशेष सचिव हरि प्रताप शाही ने राज्यपाल की आज्ञा से जिलाधिकारी टी0के0शिबू ने निलंबन आदेश किया जारी। पोस्टल बैलेट पेपर सील न करके सार्वजनिक स्थल पर प्रदर्शित होने के कारण मीडिया में खबर चलने के बाद पूरे जनपद में मतदान निरस्त होने की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। जिसके बाद आयुक्त विंध्याचल मंडल द्वारा जनप्रतिनिधियों को विश्वास में लेकर पुनः सीलिंग कराकर प्रकरण का निस्तारण कराया गया और पूरे प्रकरण की जाँच करायी गयी। जिसमें प्रथम दृष्टया जिलाधिकारी टी0के0 शिबू दोषी पाए गए। जिलाधिकारी टी0के0शिबू के विरुद्ध जाँच के लिए आयुक्त वाराणसी मंडल को जाँच अधिकारी नियुक्त किया गया है। वहीं जिलाधिकारी टी0के0शिबू को निलंबन के बाद राजस्व परिषद लखनऊ से संबद्ध कर दिया गया है।

अपर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गेहूँ खरीद सम्बंधित बैठक

संतकबीर नगर। अपर जिलाधिकारी(वि0ध्रा0) मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में दिनांक 01 अप्रैल से प्रारम्भ होने वाले गेहूँ की खरीद के संबंध में अब तक की गयी आवश्यक तैयारियोंध्व्यवस्थाओं की समीक्षा कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद के सभी गेहूँ खरीद केन्द्र प्रभारियों के साथ बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिला खाद्य विपणन अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद में कुल 55 गेहूँ खरीद केन्द्र बनाये गये है, जिसमें खाद्य विभाग के 12 क्रय केन्द्र, पी0सी0एफ0 के 38 क्रय केन्द्र एवं पी0सी0यू0 के 05 क्रय केन्द्र स्थापित किये गये है। क्रय केन्द्रो पर गेहूँ की खरीद दिनांक 01 अप्रैल 2022 से प्रारम्भ होकर 15 जून 2022 तक प्रभावी रहेगी। गेहूँ क्रय केन्द्र प्रातः 09 बजे से शाम 06 बजे तक खुले रहेगें। राजपत्रित एवं रविवार अवकाशो को छोड़कर शेष कार्य दिवसों में गेहूँ क्रय केन्द्र खुले रहेगें। कृषकों से न्यूनतम समर्थन मूल्य 2015 रू0 प्रति कुन्तल के आधार पर रबी विपणन वर्ष 2022–23 में क्रय किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जनपद में सभी केन्द्रों पर केन्द्र प्रभारियों की तैनाती कर दी गई है। अपर जिलाधिकारी मनोज कुमार सिंह द्वारा समस्त क्रय केन्द्रों पर आवश्यक व्यवस्थायें व गेहूँ क्रय से सम्बन्धित उपकरण यथा इलेक्ट्रॉनिक कांटे, नमी मापक यन्त्र, छलना, विनोइंग फैन, पावर डस्टर आदि के साथ–साथ क्रय केन्द्रों पर रखे जाने वाले अभिलेख–स्टॉक रजिस्टर, बोरा रजिस्टर, क्रय पंजिका, निरीक्षण पंजिका, रिजेक्शन पंजिका आदि सुव्यवस्थित रखने के निर्देश दिये गये। उन्होंने बताय कि क्रय केन्द्रों पर शासन द्वारा निर्धारित बैनर, समर्थन मूल्य व टोल फ्री नम्बर सहित प्रदर्शित रहेगा। इसके लिये सम्बन्धित सचिव, कृषि उत्पादन मण्डी समिति तथा क्रय एजेन्सी के जिला प्रभारियों को निर्देशित किया गया है। अपर जिलाधिकारी ने क्रय केन्द्रों पर किसानों के लिए पीने का पानी, बैठने की व्यवस्था, आदि को भी सुनिश्चित कराने के लिए जिला खाद्य विपणन अधिकारी को दिये। रबी विपणन वर्ष 2022–23 में न्यूनतम समर्थन योजनान्तर्गत गेहूँ विक्रय करने हेतु कृषकों को खाद्य विभाग के बेबसाईट बि.नच.हवअ.पद पर पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। 15 मार्च 2022 से पंजीकरण हेतु विभागीय बेबसाईट बि.नच.हवअ.पद सक्रिय हो गया है।

गेहूँ विक्रय से पूर्व कृषक किसी भी जनसुविधा केन्द्र, साइबर कैफे अथवा स्वंय के मोबाईल से ऑनलाईन पंजीकरण करा सकते है। इस वर्ष ओ0टी0पी0 आधारित पंजीकरण की व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत पंजीकरण हेतु कृषक वर्तमान मोबाईल नम्बर ही अकिंत कराये जिसमें एस0एम0एस0 द्वारा प्रेषित ओ0टी0पी0 को भरकर पंजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण कराना होगा। अपनी खतौनी में अंकित खाता संख्या को पंजीयन में दर्ज कर अपने कुल रकबे एवं बोये गये गेहूँ के अथवा अन्य फसल के रकबे को भी अंकित करना होगा। संयुक्त भूमि की दशा में अपने हिस्सेदारी की सही घोषणा भी करनी होगी। कृषक अपना आधार संख्या, आधार कार्ड में अंकित अपने नाम आदि को सही–सही अंकित करें। गेहूँ बिक्री के समय क्रय केन्द्रों पर किसान के स्वंय उपस्थित न होने पर पंजीकरण प्रपत्र में परिवार के नामित सदस्य का विवरण एवं आधार नम्बर दर्ज कराना अनिवार्य होगा। गत धान खरीद वर्ष 2021–22 हेतु पंजीकरण करा चुके कृषकों को गेहूँ विक्रय हेतु पुनः पंजीकरण कराने की आवश्यकता नही है परन्तु उक्त पंजीकरण को संशोधित कर पुनः लॉक कराना होगा। पंजीकरण आवेदन लॉक करने के लिये पंजीकरण हेतु अंकित मोबाईल नम्बर पर ओ0टी0पी0 आयेगा। किसान अपना पंजीकरण लॉक कराने के पूर्व अच्छी तरह से देख लें कि उनके द्वारा सारी जानकारी सही भरी गयी है अथवा नही। कृषकों को गेहूँ के मूल्य का भुगतान आधार लिंक बैंक खाते में किया जायेगा। कृषक अपना खाता सी0बी0एस0 बैंक में ही खुलवायें।

कृषक का बैंक खाता आधार सीडेड (अर्थात बैंक खाता आधार नम्बर से जुड़ा हो) एवं बैंक द्वारा एन0पी0सी0आई0 पोर्टल पर मैप्ड हो तथा बैंक खाता सक्रिय हो। इस अवसर पर प्रशिक्षु उप जिलाधिकारी नमन मेहता, डिप्टी आर0एम0ओ0 रूपेश सिंह सहित सभी क्रय केन्द्र प्रभारी एवं नोडल अधिकारी उपस्थित रहे।

टेराकोटा को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड द्वारा दिए गए प्रशिक्षण में सीडीओ ने किया सम्मानित

गोरखपुर।नाबार्ड द्वारा महिला स्वरोजगार को बढ़ावा देने हेतु पन्द्रह दिवसीय टेराकोट्टा आभूषण का प्रशिक्षण विकास खण्ड पिपराइच

, गोरखपुर में आयोजित कराया गया। इस प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र वितरण समारोह दिनांक 31 मार्च 2022 को हुआ। इस प्रशिक्षण में समूह की 60 महिलाओ को टेराकोट्टा से बनने वाले विभिन्न आभूषण के विषय मे अवगत कराया गया द्य इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान महिलाओ ने टेराकोट्टा आभूषण को बनाना और उसकी मार्केटिंग के विषय में जाना ।कार्यक्रम के दौरान जिला विकास प्रबंधक गोरखपुर श्रीमती दीप्ति पंत ने नाबार्ड द्वारा स्वयं सहायता समूह को आगे बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रयासों की चर्चा की और नाबार्ड द्वारा हर संभव सहयोग का आश्वाशन दिया द्य खण्ड विकास अधिकारी पिपराइच सुश्री प्रीती वर्मा ने प्रशासन द्वारा स्वयं सहायता समूहों के लिए किए जा रहे विभिन्न प्रयासों की जानकारी दी एवं महिलाओं को जागरूक होने पर जोर दिया द्य मुख्य विकास अधिकारी इन्द्रजीत सिंह ने सभी महिला को उद्यमिता की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा प्रशासन द्वारा हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। मुख्य विकास अधिकारी श्री इन्द्रजीत सिंह ने नाबार्ड से स्वयं सहायता समूह के उत्पादों की मार्केटिंग एवं अन्य मेलों के माध्यम से जोड़ने का बल दियाद्य नाबार्ड द्वारा स्थापित प्रोडक्शन सेंटर एवं इलेक्ट्रिक पॉटरी व्हील और इलेक्ट्रिक ओवन भी महिलाओ को हैण्डओवर किया। कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाली महिलाओ को नाबार्ड द्वारा जारी प्रतिभागिता का प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। एल . ई. डी . पी कार्यक्रम के समापन करते हुए के नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधक गोरखपुर एवम सोमिक कुमार (जे. पी. एम . सोसाइटी) ने सभी का आभार व्यक्त किया और आश्वस्त किया कि भविष्य में भी स्वयां सहायता समूहो को आजीविका की दिशा में ऊंचाइयों पर ले जाने हेतु आवश्यक प्रयास किए जाएगे। समापन अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी इन्द्रजीत सिंहयश्रीमती दीप्ति पंत जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड, गोरखपुरय खण्ड विकास अधिकारी पिपराइच सुश्री प्रीती वर्मा, सोमिक कुमार (जे. पी. एम सोसाइटी, गोरखपुर), सहायक विकास अधिकारी(ऐ्ठ) बृजमोहन राय, सहायक विकास अधिकारी पंचायत अवनीन्द्र तिवारी एवं ब्लॉक मिशन प्रबंधक गौरव त्रिपाठी, राकेश यादव, देवेन्द्र दुबे, असलम अहमद रश्मि वर्मा, मास्टर ट्रैनर (जे. पी. एम सोसाइटी गोरखपुर) अनीता श्रीवास्तव अजय वर्मा व स्वयं सहायता समूह की महिलाएं भी उपस्थित थी।

यूपी बोर्ड परीक्षा केंद्रों का डीएम व एसएसपी ने किया औचक निरीक्षण

गोरखपुर। हाई स्कूल व इंटरमीडिएट परीक्षा ऑफलाइन 199 परीक्षा केंद्रों पर वॉइस रिकॉर्डिंग सीसी कैमरे की निगरानी में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच चल रहे परीक्षा केंद्र सेंट जोसेफ इंटर कॉलेज तथा महात्मा गांधी इंटर कॉलेज के परीक्षा केंद्रों का जिलाधिकारी विजय किरन आनंद व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ विपिन ताडा परीक्षा नोडल एडीएम सिटी विनीत कुमार सिंह के साथ औचक निरीक्षण कर परीक्षा व्यवस्थाओं के बारे में जानकारियां प्राप्त कर संबंधित कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया ताकि चल रहे परीक्षाओं में किसी प्रकार की कहीं भी किसी तरह की गड़बड़ी की संभावना ना रह जाए क्योंकि परीक्षा केंद्रों पर केंद्र व्यवस्थापक के साथ ही सहायक केंद्र व्यवस्थापक सिटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए गए हैं प्रश्न पत्रों को खोलने के लिए

प्रबंधक व सहायक प्रबंधक अपने अपने पास रखे गए चाभी से प्रश्न पत्रों निकाल कर परीक्षा को सकुशल संपन्न कराने का काम करेंगे प्रबंधक या सहायक प्रबंधक के ना रहने पर स्टैटिक मजिस्ट्रेट के पास रखे गए तीसरी चाबी का उपयोग करते हुए प्रश्न पत्र को निकालने का काम करेंगे।

परीक्षा केंद्रों का जिलाधिकारी ने निरीक्षण कर संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिया यूपी बोर्ड 2022 की हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा कड़ी सुरक्षा के बीच प्रतिदिन सुबह आठ बजे से 11 बजे व द्वितीय पाली 2 से 5 तक दो पालियों में आयोजित हो रहा है पहली पाली में हाईस्कूल व दूसरी पाली में इंटर की परीक्षा हो रही है। जनपद में इस बार परीक्षा में 199 केंद्रों पर एक लाख 27 हजार 831 परीक्षार्थी शामिल हो रहे हैं। इनमें हाईस्कूल के 66869 संस्थागत व 149 व्यक्तिगत समेत 67038 तथा इंटर के 58541 संस्थागत व 2252 व्यक्तिगत समेत 60793 परीक्षार्थी शामिल हैं। नकलविहीन व शुचितापूर्ण परीक्षा संपन्न कराने के लिए जिला व राज्य स्तरीय कंट्रोल रूम लखनऊ से निगरानी की जा रही है। परीक्षा सुचारू रूप से संचालित करने के लिए जिलाधिकारी विजय किरन आनंद ने परीक्षा की कमान केंद्र व्यवस्थापक 199 अतिरिक्त केंद्र व्यवस्थापक199 स्टेटिक मजिस्ट्रेट 199 सेक्टर मजिस्ट्रेट 26 जोनल मजिस्ट्रेट 10 सचल दल 04 परीक्षा में ड्यूटी के दौरान कक्ष निरीक्षक व कर्मचारियों को मोबाइल फोन ले जाने की अनुमति नहीं है। परीक्षा केंद्रों के बाहर चाक–चौबंद व्यवस्था है। किसी तरह की गड़बड़ी न हो इसके मद्देनजर आसपास के सभी फोटो कापी की दुकानों को बंद करा दिया गया है। प्रत्येक केंद्र के बारह धारा 144 लागू है तथा पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की गई है। जिलाधिकारी व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक समेत सभी विभागीय व प्रशासनिक उच्चाधिकारी ने परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण कर परीक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। जिलाधिकारी विजय किरन आनंद व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉक्टर विपिन ताडा परीक्षा केंद्रों पर सेंट जोसेफ इंटर कॉलेज व महात्मा गांधी इंटर कॉलेज पहुंचकर कर्मचारियों से वार्ता कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए जिससे यूपी बोर्ड की परीक्षा सकुशल संपन्न कराई जा सके परीक्षा के दौरान किसी भी बाहरी व्यक्ति को परीक्षा केंद्रों पर जाने के लिए पूर्णत प्रतिबंधित है।

ब्लॉक संसाधन केंद्र बावन पर नारी शिक्षा चौपाल का हुआ आयोजन

हरदोई।ब्लॉक संसाधन केंद्र बावन पर खंड शिक्षा अधिकारी इंद्र प्रताप सिंह के नेतृव में नारी शिक्षा चौपाल का आयोजन किया गया। चौपाल में मुख्य अतिथि महिला थाना प्रभारी रामसुखारी सिंह ,विशिष्ट अतिथि जिला पंचायत सदस्य सुमित्रा मित्रा व जिला व्यायाम शिक्षिका शिमला सिंह का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया गया। कार्यक्रम का संचालन नोडल शिक्षक अभिषेक गुप्ता द्वारा किया गया।

रामसुखारी सिंह ने कहा कि बेटी और बेटा दोनो घर के उजाले है, हमे इनमें भेद भाव नही करना चाहिए।ये व्यवहार हमे घर से ही शुरू करेंगे, तभी समाज मे बदलाव कर पायेंगे। लड़कियों को सावधान किया कि किसी के बहकाव में न आये। उन्होंने हेल्पलाइन नंबरो की भी जनकारी दी। सुमित्रा मित्र ने कहा कि लड़कियां आज किसी क्षेत्र में पीछे नहीं है। हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर की हिस्सेदारी निभा रही है।इसलिये लड़िकयों की शिक्षा बहुत जरूरी है। शिमला सिंह ने कहा कि समाज इतना आगे बढ़ चुका है उसके बावजूद महिलाएं पीछे रह जाती है, तभी तो हमे आज भी नारी शिक्षा चौपाल का आयोजन करना पड़ता है। जब महिलायें शिक्षित होंगी, तभी सशक्त भी होंगी। खंड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि बालिकाओं की शिक्षा के मुददे पर माता पिता के साथ साथ समुदाय को भी जागरूक रहना पड़ेगा, तभी तो बेटियों की शिक्षा नही रुकेगी।कार्यक्रम में लड़के और लड़कियों में समानता पर आधारित एक लघु नाटिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों तत्योरा की छात्राओं प्रार्थना,प्रतीक्षा, क्षमा, श्वेता,पूर्णिमा, अंशिका द्वारा प्रस्तुत किया गया।बालिका शिक्षा सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन पर आधारित स्टॉल प्राथमिक विद्यालय मुजाहिदपुर ,उच्च प्राथमिक विद्यालय मुजाहिदपुर, संविलियन विद्यालय तत्योरा, कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय द्वारा लगाई गई।स्टॉल में बालिका शिक्षा, मिशन शक्ति, मीना मंच, जीवन कौशल शिक्षा आत्मरक्षा प्रशिक्षण आदि विषय पर किए गए कार्यों का प्रदर्शन किया गया। कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों द्वारा आत्मरक्षा कौशल का प्रदर्शन भी किया गया।आत्म रक्षा कौशल प्रशिक्षण में उत्कृष्ट प्रशिक्षण लेने वाली उच्च प्राथमिक विद्यालय मुजाहिदपुर की छात्राओं काजल, दिव्या, रागिनी ,पूजा, साधना को अतिथियों द्वारा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। अभिषेक गुप्ता ने जानकारी दी सभी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मिशन शक्ति के अंतर्गत रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा कौशल प्रशिक्षण शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों द्वारा विद्यालयों में छात्राओं को दिया जा चुका है। कार्यक्रम में विचार ए आर पी निरुपमा सिंह, ए आर पी दीप्ति त्रिवेदी, अलका शर्मा, मीना सिंह, स्नेह सिंह, शाबीन खान, मोती लाल वर्मा ने भी विचार व्यक्त किये।चौपाल में ए आर पी जी एस सिंह, ए आर पी अभिषेक तिवारी, भानु प्रताप सिंह, राजीव वर्मा, अक्षय सिंह, अमित पाण्डेय सहित अन्य शिक्षक शिक्षिकाएं,छात्र छात्राएं, अभिभावक, विद्यालय प्रबंधसमिति के , स्थानीय नागरिक आदि उपस्थित रहे।

इसी के साथ ब्लॉक संसाधन केंद्र बावन पर एक दिवसीय जेन्डर इक्विटी के अंतर्गत प्रधानाध्यापकों की एक दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। कार्यशाला का संचालन ब्लॉक सन्दर्भदाता अमित पाण्डेय व शबीना खान द्वारा किया गया। कार्यशाला में सहयोग एस आर जी(जेंडर इक्विटी) अभिषेक गुप्ता ने किया।

राज्यमंत्री नितिन अग्रवाल का हरदोई सीमा पर किया गया स्वागत

हरदोई। जिले में राज्यमंत्री के प्रथम आगमन पर कार्यकर्ताओं ने माल्यार्पण कर जगह–जगह किया जोरदार स्वागत किया। आबकारी एवं मद्य निषेध राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार नितिन अग्रवाल का जिला हरदोई में प्रथम आगमन पर कार्यकर्ताओं और शुभचिंतकों ने माल्यार्पण कर जोरदार जगह–जगह स्वागत किया। कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह था। कार्यकर्ताओं के उत्साह से मंत्री काफी अभिभूत थे। लखनऊ हरदोई मार्ग पर ग्राम सभा रैसों में किरण गुप्ता प्रधान पति, प्रधान प्रतिनिधि सदाशिव गुप्ता, पूर्व ब्लाक प्रमुख राजबहादुर, विनोद द्विवेदी, जिला पंचायत सदस्य सुमेर वर्मा, मैट्रो रेस्टोरेंट पर संचालक फरीद अहमद खां, नवाब अहमद खां, चंदन गुप्ता, धार्मेंद्र जायसवाल, कदीर पहलवान, सबीब अहमद खां, बालाजी धर्म कांटा पर युवा नेता लिटिल गुप्ता उर्फ सूर्या गुप्ता, आलोक राठौर, दीपक गुप्ता, कछौना चौराहे पर भाजपा पदाधिकारी गण नगर प्रमुख प्रतिनिधि विकास विश्वकर्मा उर्फ गोल्डी, सभासद गण अभय कुमार सिंह उर्फ टिंकू, धर्मेंद्र सिंह, व्यापार मंडल पदाधिकारी गण, राहुल अग्रवाल, पंकज शुक्ला युवा भाजपा नेता, ग्राम प्रधान सुधीर गाजू, दुर्गेश सिंह, सौरभ सिंह, मण्डल अध्यक्ष नवीन पटेल, अनूप दीक्षित, ग्राम प्रधान राजेश कुमार, पूर्व प्रधान संदीप कुमार उर्फ बबलू, सलिल दीक्षित, मदन मिश्रा, पूर्व ग्राम प्रधान कौशल दीक्षित, विधानसभा परिषद सदस्य अशोक अग्रवाल के आवास पर समर्थक अचल अग्रवाल, राजकुमार अग्रवाल उर्फ भल्ले, श्रीश मिश्रा, मोहम्मद नसीम, मयंक सिंह, देवी शंकर शुक्ला, गौतम कनौजिया, जिला पंचायत सदस्य विजय कुमार पासी, डबल नहर पुल पर ग्राम प्रधान आशीष कुमार, सतीश कुमार सिंह, प्रबंधक एके सिंह, सतीश कुमार सिंह, कौशल, प्यारेलाल, ग्राम सभा सुन्नी ग्राम प्रधान महेश गुप्ता, ग्राम प्रधान ओमप्रकाश, पूर्व प्रधान राजाराम, भैया लाल द्विवेदी, युवा कार्यकर्ता रोहित कुमार, पूर्व ग्राम प्रधान अवधेश गुप्ता सहित दूरदराज के शुभचिंतकों ने जोरदार स्वागत किया।

परीक्षा देने आई लड़की अचानक बेहोश, भेजा गया अस्पताल

हरदोई।स्थानीय कस्बे में स्थित कस्बे डॉ राम मनोहर लोहिया इंटर कॉलेज में . अंग्रेजी विषय की परीक्षा देने आई एक छात्रा परीक्षा देते समय करीब 3रू50 बजे अचानक बेहोश हो गई। आनन–फानन में बेहोशी हालत में छात्रा को सीएचसी में भर्ती कराया गया। जिससे उसका पेपर छूट गया। बेहोशी हालत में डॉक्टरों ने छात्रा को जिला अस्पताल के लिए रिफर कर दिया है। मंगूलाल मांटेसरी इंटर कॉलेज चकौती खुर्द की छात्रा रागिनी पुत्री चंद्रपाल सिंह दूसरी पाली में अंग्रेजी विषय की परीक्षा देने हरपालपुर कस्बे के डॉक्टर राम मनोहर लोहिया बालिका इंटर कॉलेज हरपालपुर में परीक्षा देने आई थी। 2 बजे पेपर शुरू होने के बाद करीब 3बजे वह अचानक बेहोश हो गई। आनन–फानन में उसे परीक्षा केंद्र के शिक्षकों ने पड़ोस में ही स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। सीएचसी के चिकित्सक डॉ अजीतमणि ने बताया कि छात्रा को मिर्गी के दौरे आने से शरीर के अंग शिथिल पड़ गए। गंभीर हालत में उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

हमारा आंगन–हमारे बच्चे से प्री–प्राइमरी को मजबूत करने पर जोर

हरदोई। विकास खण्ड क्षेत्र के अंतर्गत खंड शिक्षा कार्यालय कछौना में लॉक स्तरीय ष्हमारा आंगन, हमारे बच्चेष उत्सव का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य 3 से 8 वर्ष तक आंगनबाड़ी केंद्र पर पढ़ने वाले बच्चों की शिक्षा को मजबूत करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आधारभूत साक्षरता के प्रथम सोपान के रूप में पूर्व प्राथमिक शिक्षा को चिन्हित किया गया था। बुनियादी साक्षरता एवं प्राथमिक अंकीय दक्षता प्राप्त करने हेतु प्राथमिक शिक्षा का शोभा सार्वभौमिकरण किया जाना लक्षित है। बुनियादी साक्षरता हेतु लक्षित आयु वर्ग 3 से 8 वर्ष को निर्धारित अधिकतम स्तर की संप्राप्ति के उद्देश्य से शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निपुण भारत का 5 जुलाई 2021 को शुभारंभ किया गया था। जिसको लेकर समस्त विकास खण्ड में एक साथ हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जन समुदाय को पूर्व प्राथमिक शिक्षा से जोड़ना है। जिसके फलस्वरूप आयु वर्ग 3 से 6 वर्ष के बच्चों का आंगनबाड़ी केंद्रों में नामांकन एवं नियमित उपस्थिति में बढ़ोतरी होना अपेक्षित है। इसके साथ ही निपुण भारत के अंतर्गत चयनित बुनियादी साक्षरता के अंतर्गत कक्षा 1,2,3 हेतु निर्धारित लक्ष्यों की संप्राप्ति राज्य की कार्य योजना से जन समुदाय को अवगत कराना है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत संबंधित प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में प्राथमिक विद्यालय के नोजल अध्यापक एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्री के सहयोग से 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों को गतिविधि के आधार पर आवश्यक दक्षताओं को पूर्ण किया जा सकेगा। इस कार्यक्रम के दौरान खण्ड शिक्षा अधिकारी मनोज कुमार बोस, ए०आर०पी० राजेश कुमार, जगबीर सिंह, लाल बहादुर सिंह, दीपक जायसवाल, विपिन कुमार शुक्ला, विजय कुमार, प्रवीण कुमार के साथ–साथ समस्त अध्यापक गण व आंगनवाड़ी कार्यकत्री मौजूद रहीं।

भूकंप व फायर आपदा होने पर खोज, राहत व बचाव कार्य हेतु मेगा मॉक अभ्यास किया गया

हरदोई। मेगा माक अभ्यास को लेकर जिलाधिकारी अविनाश कुमार की अध्यक्षता मे अपर जिलाधिकारी वंदना त्रिवेदी, एस. डी.एम. दीक्षा जैन, एनडीआरएफ टीम कमांडर निरीक्षक बिनय कुमार और उप निरीक्षकध्सा. परस राम जाखड़ और अन्य सम्बन्धित अधिकारियों की बैठक हुयी, जिसमे अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये गये। इसके पश्चात भूकम्प व आगजनी आपदा में बचाव कार्य पर एन०डी०आर०एफ० व जनपद हरदोई की अन्य संस्थाओ द्वारा मेगा मॉक अभ्यास सदर तहसील हरदोई में एन०डी०आर०एफ० के कमांडेंट मनोज कुमार शर्मा के कुशल दिशा निर्देशन में एन०डी०आर०एफ० लखनऊ टीम व हरदोई जिले के फायर विभाग, पी.डब्लू.डी., जिला पुलिस, स्वास्थ्य विभाग, सिचाई विभाग, नेहरू युवा केन्द्र और रेड क्रास की टीमो द्वारा किसी भी प्रकार की भूकंप व फायर आपदा होने पर खोज, राहत व बचाव कार्य हेतु मेगा माक का संयुक्त अभ्यास किया गया। मॉक अभ्यास मुख्य उद्देश्य घायल व चोटिल ब्यक्तियो के अमूल्य जीवन की रक्षा करना, सभी रेस्पोंस एजेंसियों का रेस्पोंस चेक करना व सभी स्टेक होल्डरस के बीच आपसी समन्वय स्थापित करना है तथा इस मेगा माक अभ्यास द्वारा खोज, राहत व बचाव कार्य के संचालन में आने वाली कमियों की समीक्षा कर उन्हें दूर करना है। इससे पहले मेगा माक पर आधारित मॉक अभ्यास के प्रथम चरण में एन०डी०आर०एफ० अधिकारियों व जिलाधिकारी व फायर, पी. डब्लू.डी., जिला पुलिस, स्वास्थ्य, सिचाई, नेहरू यूवा केन्द्र और रेड क्रास विभाग के अधिकारियों द्वारा बैठक कर इस मेगा माक अभ्यास की सम्पूर्ण रूप रेखा तैयार की गयी इस मेगा माक अभ्यास का नेतृत्व एन०डी० आर०एफ० के टीम कमांडर निरीक्षक बिनय कुमार द्वारा लखनऊ टीम के 30 सदस्यी टीम द्वारा किया गया टीम कमांडर निरीक्षक बिनय कुमार ने बताया कि आपसी समन्वय से सकारात्मक पहल व सशक्त रिस्पोंस सिस्टम को विकसित करने से इस तरह की भूकंप व आगजनी जैसी आपदाओ में होने वाली दुर्घटनाओ से आसानी से निपटा जा सके और समय –समय पर इस तरह के मेगा मॉक अभ्यास द्वारा महत्वपूर्ण जीवन की रक्षा की जा सकेगी इस मेगा माक अभ्यास के दौरान एस. डी.एम. दीक्षा जैन, एनडीआरएफ टीम कमांडर निरीक्षक बिनय कुमार और उप निरीक्षकध्सा. परस राम जाखड़ सहित 30 सदस्यी टीम एवं अन्य संस्थाओ के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

कस्बे में फूड इन्स्पेक्टर ने पकड़ा मिलावटी दूध

हरदोई।कस्बे के अंदर दूध के नाम पर सफेद जहर बेंच रहे दूधियों पर कार्यवाही की गई। छुट्टो पुरवा निवासी शब्बीर पुत्र हामिद सहित दो अन्य दूधिए की जाँच –परख और आवश्यक कार्रवाई के उद्देश्य से दूध का सैंपल भरा गया। बीते .उन्होंने पिहानी में दूधियों को पकड़ कर सैम्पल भी लिए थे फिर भी दूधियों पर कोई असर नहीं पड़ा तो एण्टी करप्शन इण्डिया टीम के पिहानी सदस्य डॉ शवीह अब्बास की शिकायत पर ठीक एक हफ्ते बाद कल बीते पुनः छापेमारी की गई।जिसमें तीन दूधियों के दूध की सैम्पलिंग की गई।सबसे खराब दूधा शब्बीर पुत्र हामिद निवासी छुट्टूपुरवा का मिला।दूध सैम्पलिंग के बाद फूड इन्स्पेक्टर अजीत सिंह ने कस्बे में कोल्ड ड्रिंक व अन्य कई खाद्य सामग्री की दुकानों पर भी छापेमारी की।इस दौरान पत्रकार वार्ता में फूड इन्स्पेक्टर अजीत सिंह ने भी कहा कि यह दूध देखने में ही गुणवत्ताहीन है यह तो मानव जीवन के लिए वाकई घातक है।दरअसल यहाँ वर्षों से मिलावटी दूध और बनावटी मट्ठे का गोरखधंधा चल रहा है।जिससे प्राणघातक कैंसर और हार्ट ब्लॉकेज एवं पीलिया जैसे रोगों ने पैर पसार रखे हैं। एण्टीकरप्शन इण्डिया टीम के पिहानी सदस्य ने जाँच और कार्रवाई बावत आवाज उठाई और इस जहरीले केमिकल युक्त दूध से जन–मानस पर प्राणघातक हमले करने की खबर का प्रकाशन कराया।तब जाकर नगर में फूड इन्स्पेक्टर अजीत सिंह अपने सहायक दीपक मिश्रा को लेकर सक्रियता से जाँच पड़ताल में जुटे।मिलावटखोरों और दूधियों में मचा हड़कम्प मचा है।

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम के गैस बॉटलिंग प्लांट के बाहर मनमाने ढंग से खडे होते है गैस टैंकर

उन्नाव। स्थानीय दही चौकी स्थित हिन्दुस्तान पेट्रोलियम के गैस बॉटलिंग प्लांट की मनमानी थमने का नाम नही ले रही है। इस पर कार्यवाही की बात पर अधिकारी पत्राचार की बात तो करते है लेकिन लापरवाही मिलने के बावजूद कार्यवाही करने की हिम्मत कोई नही जुटा पाता। एक बार बडा हादसा होने के चलते इस प्लांट पर निलंबन की कार्यवाही भी विभाग ने कही न कही अपनी छवि बचाने में आनन फानन में कर दी थी लेकिन ऐसा कौन सा मानक उक्त प्लांट द्वारा पूरा कर दिया गया कि लाइसेंस पुनः बहाल कर दिया गया।

यह सारे बिंदु निश्चित तौर पर उच्चस्तरीय जांच का विषय है लेकिन अहम बात यह है कि यह टैंकर पुनः सडक पर बेतरतीब ढंग से खडे होने का सिलसिला आरंभ हो गया जिससे किसी बडे हादसे की संभावना को इंकार नही किया जा सकता। बता दें कि इस प्लांट से लगभग 24 जिलों के 320 डीलरों को एलपीजी गैस की आपूर्ति की जाती है इसके बावजूद उक्त प्लांट सुधरने का नाम नही ले रहा है। शायद जिम्मेदारों को भी किसी बडे हादसे का इंतजार है। अग्निशमन अधिकारी शिवदरश ने बताया कि बीती 28 मार्च को सुरक्षा के संबन्ध में हिंदुस्तान पेट्रोलियम द्वारा प्लांट परिसर में बॉम्ब थ्रेट ड्रिल का आयोजन किया गया था। जिसमें उनके द्वारा यह बात रखी गई कि आपके यहां पार्किंग के पर्याप्त इंतेजाम नही है जिसे पूर्ण करना आवश्यक है। अब बडी बात ये है कि इस समस्या पर अग्निशमन विभाग भी चिंता जाहिर कर चुका है बावजूद इसके यहां पर अभी तक पार्किंग के बेहतर इंतेजाम नही कराए गए। प्लांट की इस उदासीनता के चलते किसी बडे हादसे की पुनरावृत्ति से इंकार नही किया जा सकता।

मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन की बैठक संपन्न

उन्नाव। स्थानीय कलेक्टरगंज स्थित कुमार गेस्ट हाउस में मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन उत्तरप्रदेश की एक बैठक आहुत की गई। जिसकी अध्यक्षता जिलाध्यक्ष गायत्री प्रसाद प्रजापति ने की। बैठक में संगठन के पदाधिकारियों ने पत्रकारों के सूचना संकुल व पत्रकार समन्वय समिति का गठन न होने पर रोष प्रकट किया गया। बता दें कि बीती 2 अगस्त 2021 को इस संबन्ध में डीएम को एक ज्ञापन भी दिया जा चुका है बावजूद इसके स्थानीय प्रशासन द्वारा कोई कार्यवाही नही की गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस पर एक वृहद कार्यक्रम किया जाएगा। जिसमें जिले के कई पत्रकारों का सम्मान भी किया जाना है। बैठक में प्रदेश के मंत्रियों को आमंत्रण संबन्धी चर्चा भी की गई। इस दौरान आगामी 2 अप्रैल को भारतीय नूतनवर्ष पर संगोष्ठी का आयोजन किए जाने संबन्धी प्रस्ताव रखा गया। बैठक में प्रमुख रुप से प्रदेश अध्यक्ष डा0 सुधीर शुक्ल, नीरज सोनी, आशीष दीक्षित, राजेंद्र सिंह सेंगर, अश्वनी अवस्थी, आनंद कुमार शर्मा, अनिल शुक्ल, सत्येंद्र सिंह, शशांक मिश्र, धमेंद्र शर्मा, प्राचीन मिश्र, श्रीकांत तिवारी, अरविंद शुक्ल, डा0 जावेद जैदी, उमाकांत मिश्र, चौतन्य त्रिपाठी, आदित्य त्रिपाठी, सुधांशु दीक्षित, उपेंद्र त्रिपाठी सहित अन्य पत्रकार उपस्थित रहे।

दरगाह पर पत्नी के कत्ल करने वाला पति गिरफ्तार

चरित्र पर शक होने के कारण दरगाह पर पत्नी का किया था कत्ल

हरदोई।जिले की पुलिस ने दरगाह पर महिला की कुल्हाड़ी से गला काटकर हत्या करने के आरोप में उसके पति को गिरफ्तार किया है। आरोपी पति अपनी पत्नी के चरित्र पर शक करता था।एक चार साल के बेटे और गर्भ में पल रही संतान को अपनी संतान न होने के शक के कारण वह पत्नी को दरगाह पर उसकी सच्चाई साबित करने के लिए कसम खिलाने के लिए लेकर गया था। दरगाह पर जब पत्नी ने कसम खाने से इंकार कर दिया तो उसने दरगाह पर ही कुल्हाड़ी से पत्नी का गला काट कर हत्या कर दी। पुलिस ने पत्नी की हत्या के आरोप में आरोपी पति को जेल भेज दिया है।

क्रय केन्द्रों पर गेहूँ खरीद की तैयारियों के सम्बन्ध में कार्यशाला का किया गया आयोजन

प्रतापगढ़, रबी विपणन वर्ष 2022–23 के अन्तर्गत क्रय केन्द्रों पर गेहूँ खरीद की तैयारियों के सम्बन्ध में अपर जिलाधिकारी (वि0ध्रा0) मुकेश चन्द्र की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी ने बताया कि दिनांक 01 अप्रैल 2022 से क्रय केन्द्रों पर गेहूँ खरीद की प्रक्रिया प्रारम्भ होगी। इस वर्ष गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य रूपये 2015 प्रति कुन्तल निर्धारित किया गया है। जनपद में खाद्य विभाग के 17 एवं पीसीएफ संस्था के 27 क्रय केन्द्र खोले गये है। अपर जिलाधिकारी ने क्रय केन्द्र के प्रभारियों को निर्देशित किया कि शासन के मानक के अनुरूप किसानों से गेहूँ की खरीद की जाये। क्रय केन्द्रों पर पहुँचने वाले किसानों से सम्मानजनक व्यवहार किया जाये। सभी क्रय केन्द्रों पर छलना, पंखा, इलेक्ट्रानिक कांटा, डस्टर, नमीमापक यंत्र, बोरे आदि की व्यवस्था अद्यतन रखी जाये। उन्होने कहा कि क्रय केन्द्र पर 100 कुन्तल तक गेहूँ क्रय की व्यवस्था सत्यापन मुक्त होगी। 100 कुन्तल से अधिक व 5 हेक्टेयर की जोत धारित कृषक के रकबे व गेहूँ उत्पादन का सत्यापन तहसीलदारध्उपजिलाधिकारी के सत्यापन के उपरान्त क्रय किया जाये। गेहूँ क्रय का भुगतान कृषक के बैंक खाते में जो आधार से लिंक हो एवं एन0पी0सी0आई0 से मैप हो के आधार पर किया जायेगा। गेहूँ क्रय के उपरान्त किसानों को उसकी उपज का भुगतान समय से सुनिश्चित कराया जाये इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही एवं शिथिलता कदापि न बरती जाये। उन्होने कहा कि कृषक द्वारा गेहूँ खरीद का पंजीकरण सम्बन्धित खतौनी प्रपत्र, आधार संख्या, मोबाईल नम्बर, अधिकृत प्रतिनिधि के आधार संख्या (यदि नामित है तो) के आधार पर किया जायेगा। क्रय केन्द्र पर कृषक को क्रय के उपरान्त तौल पर्ची भी दी जाये। उन्होने कहा कि क्रय केन्द्रों पर नोडल अधिकारियों की तैनाती कर दी जाये। क्रय केन्द्रों पर कृषकों को बैठने हेतु तिरपाल एवं पानी पीने की समुचित व्यवस्था की जाये। केन्द्र प्रातः 9 बजे से सायं 6 बजे तक क्रियाशील रहेगें। राजपत्रित कार्यदिवसों को छोड़कर शेष सभी दिन क्रय केन्द्र संचालित रहेगें। खाद्य विभाग के पोर्टल पर दिनांक 30 मार्च तक 1039 कृषकों द्वारा पंजीकरण कराया जा चुका है। बैठक में उपजिलाधिकारी सदर सौम्य मिश्र, जिला खाद्य विपणन अधिकारी अजीत त्रिपाठी, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी व क्रय केन्द्र प्रभारी उपस्थित रहे।

बालिकाओं ने सीख लिया आत्मरक्षा का गुर

उन्नाव। उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय बनी में संकुल स्तरीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें संकुल देवारा कलां के सभी उच्च प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं ने प्रतिभाग किया। साथ ही उच्च प्राथमिक विद्यालय बनी की प्रधानाध्यापिका शशि शुक्ला का सेवानिवृत्त उपरांत विदाई एवं सम्मान समारोह का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आशीष चौहान (खंड शिक्षा अधिकारी), सिकंदरपुर सरोसी विशिष्ट अतिथि गजेंद्र सिंह सेंगर मंडल अध्यक्ष एवं प्रदीप पाल सरोसी ने अपनी उपस्थिति के माध्यम से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में कई विद्यालयों के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। अमित कनौजिया के द्वारा बच्चों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया था, जिसका प्रस्तुतिकरण बच्चों द्वारा मंच पर किया गया। गजेंद्र सिंह ने शशि शुक्ला को सेवानिवृत होने पर अग्रिम शुभकामनाएं दी। साथ ही न्याय पंचायत देवाराकलां के समस्त शिक्षक संकुलों को इस सफल कार्यक्रम की बधाई दी। प्रदीप पाल द्वारा कार्यक्रम में सहभागी बच्चों को मैडल प्रदान किया और उनके विद्यालय की शिक्षकों को भी स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में तरुण कुमार गुप्ता, अरुण कुमार, रामाशीष, योगेंद्र सिंह, अजय शर्मा, अनूप कुमार मिश्रा, नीरज तिवारी, मंजू सचान, विभा दीक्षित, नीरजा पाल, देशरतन, मुकेश, निधि, वैशाली, ज्योतिनिशा, साधना, दीप्ति राय, विमला यादव, दिव्या, सोनेश्वरी, उमा, बीना जायसवाल, शिखा मिश्र, मनीषा, कल्पना राव कल्पना पदमा आदि ने विशेष योगदान दिया। संकुल के देवाराकला के सभी सम्मानित शिक्षक, शिक्षामित्र एवं अनुदेशकों ने अपनी उपस्थिति के माध्यम से कार्यक्रम को गौरवान्वित किया।

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के तहत 01 अप्रैल को प्रधानमंत्री जी द्वारा छात्र–छात्राओं से किया जायेगा संवाद

प्रतापगढ़, जवाहर नवोदय विद्यालय के प्राचार्य संत सिंह ने बताया है कि माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 01 अप्रैल 2022 को परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम के जरिये छात्र–छात्राओं से ताल कटोरा स्टेडियम नई दिल्ली से दूरदर्शन, यूट्यूब, फेसबुक तथा अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर संवाद स्थापित किया जायेगा। उन्होने बताया है कि छात्र, अभिभावक और शैक्षणिक वर्ग के लोग वर्चुअल माध्यमों के द्वारा 01 अप्रैल 2022 को परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम से सीधे जुड़ेगें। उन्होने बताया है कि जवाहर नवोदय विद्यालय नारायनपुर के पर्यवेक्षण में शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों द्वारा ट्विटर पर वीडियो बाइट व गणमान्य व्यक्तियो द्वारा फेसबुक एवं ट्विटर पर वीडियो बाइट शेयर किया जायेगा। विद्यालय स्तर पर आयोजित की गई परीक्षा से सम्बन्धित तनाव को कम करने की गतिविधियों को ट्विटर और फेसबुक पर व वेबसाइट पर छात्रों द्वारा पाठ्यसहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत परीक्षा से सम्बन्धित आलेख, चित्र, वीडियो और अन्य गतिविधियों को शेयर किया जायेगा।

हिन्दी दैनिक
बुद्ध का संदेश
समाचार पत्र
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स, ज्योतिनगर, मधुकरपुर, निकट हीरो होंडा एजेन्सी, सिद्धार्थनगर, 272207 उ.प्र. से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.– UPHIN/2012/49458
संस्थापकः– स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादकः– राजेश कुमार शर्मा
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एंव सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इन से उत्पन्न समस्त विवाद जनपद सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।
8795951917, 9453824459
ई–न्यूज पेपरः– www.budhakasandesh.com
E-Mail ID:. budhakasandeshnews@gmail.com

क्या आप भी रहती हैं कंफ्यूज कि कौन सा वैक्स अपनाएं, जानें इससे जुड़ी जरूरी जानकारी

महिलाएं अपनी खूबसूरती बरकरार रखने के लिए कई जातां करती हैं जिसमें से एक हैं वैक्सिंग (ड्खड्ड–द्बठ्ठद्द) जिसमें शरीर पर मौजूद अनचाहे बालों को हटाया जाता हैं। वैक्सिंग से बालों की ग्रोथ भी धीरे–धीरे कम हो जाती है एवं स्किन भी मुलायम और चिकनी हो जाती हैं। कई महिलाएं इसे पार्लर में करवाती हैं तो कुछ इसे घर पर ही करती हैं। लेकिन अक्सर देखा गया हैं कि बाजार में कई तरह की वैक्सिंग मिलने की वजह से महिलाऐं कंफ्यूज रहती हैं कि किस वैक्सिंग का इस्तेमाल किया जाए। ऐसे में आज इस कड़ी में हम आपके लिए जरूरी जानकारी लेकर आए हैं जो आपको बताएगी कि आपकी स्किन के साथ ही उपयोग के लिहाज से कौनसी वैक्सिंग सही रहेगी। तो आइये जानते हैं इसके बारे में।।।

हॉट और कोल्ड वैक्स

हॉट वैक्स को बनाने के लिए चीनी, नींबू या शहद, नींबू का प्रयोग किया जाता है। ये अधिक तापमान पर पिघल जाती है और ठंडे होने पर स्किन पर ड्राई हो जाती है। इस पर खास तरह की पट्टियों को रखकर दबाया जाता है और फिर बालों के बढने की दिशा में झटके से खींचा जाता है। यह सबसे लोकप्रिय तरीका है। वहीं कोल्ड वैक्स पैराफिन वैक्स और रेसिन जैसी इंग्रीडिएंट से बनाई जाती है। आप इसे रेडीमेड बाजार से खरीद सकते हैं। अगर अधिक मात्रा में वैक्सीन करना हो तो कोल्ड वैक्स ज्यादा असरदार होती है। सॉफ्ट वैक्सिंगः इसे स्ट्रिप वैक्सिंग के नाम से भी जाना जाता है। सॉफ्ट वैक्स के नाम से ही जाहिर होता है कि ये वैक्सिंग तब की जाती है जब वैक्स बहुत सॉफ्ट हो। यह वैक्स ठंडे और गर्म, दोनों तरह से महिलाएं इस्तेमाल कर सकती हैं। सॉफ्ट वैक्सिंग के दौरान पहले स्टिक या रोलर से वैक्स को त्वचा पर लगाया जाता है और फिर मुलायम कपड़े से कवर कर दिया जाता है और जब कपड़ा हटाया जाता है तो आपकी त्वचा के अनचाहे बाल भी हट जाते हैं। हाथ और पैरों के वैक्स के लिए यह तरीका बहुत अच्छा है। यह वैक्स यूज करने के बाद आपकी स्किन ग्लो करती हुई नजर आती है। हार्ड वैक्सिंगः अगर आप कम टाइम में वैक्सिंग कराना चाहती हैं तो हार्ड वैक्सिंग इसके लिए बहुत मुफीद मानी जाती है। सेंसिटिव स्किन के लिए यह वैक्स काफी अच्छा माना जाता है। इसमें त्वचा से वैक्सिंग करते हुए बाल हटाने के लिए किसी तरह के कपड़े या स्ट्रिप का यूज नहीं करना पड़ता। हार्ड वैक्सिंग करने के दौरान वैक्स को गर्म किया जाता है। इससे हार्ड वैक्स पिघल जाता है। इस वैक्स को लिक्विड फॉर्म में स्किन पर लगाया जाता है और ठंडा होने के साथ ही ये

हार्ड होने लगता है। हार्ड होने के बाद वैक्स को उंगलियों से ध ीरे–धीरे पकड़ें और झटके से हटा दें। हार्ड वैक्स बालों को पूरी तरह से कवर कर लेती है और छोटे–छोटे बाल भी इससे आसानी से निकल जाते हैं। यह वैक्सिंग स्किन को किसी तरह से नुकसान नहीं पहुंचाती है।

वैक्स के टाइप

चीनी नींबू वैक्सः यह एक नेचुरल वैक्सिंग है जिसे कई ब्यूटी सैलून खुद तैयार करते हैं। इसे चीनी और नींबू से तैयार किया जाता है। इसे प्रयोग करते समय यह ध्यान देना जरूरी होता है कि वैक्स ज्यादा गर्म न हो क्योंकि इससे स्किन पर जलन हो सकती है। प्राकृतिक चीजों से बनी होने के कारण यह स्किन के लिए फायदेमंद होती है और इसका नुकसान नहीं होता। यह टैन को दूर करने में भी मदद करती है।

लिपो–सॉल्यूबल वैक्सः ये वैक्स ऑयल बेस्ड होती है। बालों की रूट पर तो इनकी ग्रिप अच्छी होती ही है, साथ ही ये स्किन पर भी डेलीकेट होती हैं। इस वैक्स को इस्तेमाल करने से पहले स्किन पर ऑयल लगाया जाता है और बालों को रिमूव करने के लिए छोटी–छोटी स्ट्रिप्स यूज की जाती हैं। ये वैक्स बहुत गर्म भी हो जाए, तो भी स्किन को कोई नुकसान नहीं होता है।

चॉकलेट वैक्सः इसमें कोको बीन्स या डार्क चॉकलेट का प्रयोग किया जाता है। यह स्किन के लिए काफी फायदा होता है। इसमें बहुत अधिक मात्रा में एंटी–ऑक्सीडेंट होते हैं जो एंटी–एजिंग का काम करती है। चॉकलेट स्किन को मुलायम और कोमल बनाती है जबकि कोको बीन्स एंटी– इंफ्लेमेंटरी गुण से भरपूर होते हैं। चॉकलेट वैक्सिंग करने से सूजन कम होती है और रेडनेस नहीं आती। इसके प्रयोग से दर्द भी कम होता है। इसकी खुशबू से श्फील–गुड्य महसूस होता है।

फ्रूट वैक्सिंगः हार्ड वैक्स की तरह सेंसिटिव स्किन के लिए फ्रूट वैक्स भी काफी उपयुक्त रहती है। इसमें बैरीज और प्लम जैसे फ्रूट्स के एक्सट्रेक्ट्स होते हैं, जिसका अर्थ ये है कि ये वैक्स एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर होता है और त्वचा को नरिश करता है। यह वैक्स स्किन पर पूरी तरह से कोमल बना रहता है। हालांकि थोड़ा महंगा होता है, लेकिन यह स्किन को ग्लोइंग बनाने के लिहाज से परफेक्ट है।

एलोवेरा वैक्सः एलोवेरा स्किन को मॉइस्चराइज करता है और स्किन को कोमल बनाता है। एलोवेरा में एंटी– इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जिससे वैक्सिंग के दौरान दाने या रैश नहीं होते। इसे कम तापमान में भी किया जा सकता है।

अप्रैल में द लेडीकिलर की शूटिंग शुरू करेंगी भूमि पेडनेकर

बॉलीवुड की जानी–मानी अभिनेत्री भूमि पेडनेकर अपनी आने वाली फिल्म श्द लेडीकिलरश्य की शूटिंग अप्रैल में शुरू करेंगी। भूमि पेडनेकर फिल्म श्द लेडीकिलरश्य की शूटिंग अप्रैल के पहले

हफ्ते से शुरू कर देंगी। फिल्म में भूमि के साथ अर्जुन कपूर नजर आएंगे। यह पहला अवसर होगा जब दोनों एक–दूसरे के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करते हुए दिखाई देंगे। सस्पेंस ड्रामा से भरपूर इस फिल्म में निर्माता फैंस को एक छोटे शहर के प्लेबॉय की कहानी से रूबरू कराएंगे। इस फिल्म में अर्जुन कपूर एक छोटे शहर के प्ले ब्वॉय का किरदार निभाते हुए दिखाई देंगे। द लेडी किलर भूषण कुमार, कृष्ण कुमार और शैलेश आर सिह द्वारा निर्मित है। इस सस्पेंस थ्रिलर फिल्म का निर्देशन अजय बहल कर रहे हैं। इस फिल्म का निर्माण कर्मा मीडिया एंड एंटरटेनमेंट के साथ मिलकर गुलशन कुमार और टी–सीरीज के बैनर तले किया जा रहा है। श्द लेडीकिलरश्य के अलावा, भूमि ,अनुभव सिन्हा की फिल्म श्भीड़श्य, शशांक खेतान की श्गोविंदा आला रेश्य, अक्षय कुमार–स्टारर श्रक्षा बंधनश्य, सुधीर मिश्रा की श्अफवाश्य और गौरी खान की श्भक्षकश्य में नजर आयेंगी ।

तापसी पन्नू की मिशन इम्पॉसिबल के लिए नवीन पॉलीशेट्टी ने दी अपनी आवाज

तापसी पन्नू आगामी फिल्म मिशन इम्पॉसिबल से टॉलीवुड में वापसी कर रही है। अभिनेता नवीन पॉलीशेट्टी फिल्म में अपनी आवाज देंगे। मिशन इम्पॉसिबल को एक थ्रिलर के रूप में वर्गीकृत किया गया है। फिल्म एक अविश्वसनीय सच्ची घटना पर आधारित है।

इस बाउंटी हंटिंग फिल्म का निर्देशन एजेंट साई श्रीनिवास आत्रेय फेम के टैलेंटेड डायरेक्टर स्वरूप आरएसजे ने किया है।

निर्माताओं के अनुसार, स्वरूप आरएसजे ने अपने मनोरंजक लेखन के साथ अवधारणा का व्यावसायीकरण किया है। फिल्म में सभी व्यावसायिक तत्व होंगे और यह एक्शन और रोमांचकारी तत्वों के साथ एक पूर्ण मनोरंजक फिल्म होगी।

फिल्म में दीपक येरागरा छायाकार हैं, वहीं मार्क के रॉबिन ने संगीत दिया है। निरंजन रेड्डी और अन्वेश रेड्डी फिल्म का निर्माण कर रहे हैं, जबकि एन एम पाशा सह–निर्माता हैं। रवि तेजा गिरिजाला संपादक हैं।

मिशन इम्पॉसिबल 1 अप्रैल को अपनी भव्य रिलीज के लिए तैयार है।

तापसी पन्नू, रविंदर विजय, हरीश पारदी, ऋषभ शेट्टी, सुहास और अन्य महत्वपूर्ण भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

उर्वशी रौतेला टॉक डर्टी टू मी के हिटमेकर जेसन डेरुलो के साथ करेंगी काम

अभिनेत्री उर्वशी रौतेला ने अपने आगामी संगीत एकल के लिए लोकप्रिय गायक जेसन डेरुलो के साथ सहयोग की घोषणा की है, जो टॉक डर्टी टू मी, विगल विगल, स्वाला और ट्रम्पेट्स जैसे हिट गानों के लिए जाने जाते हैं। उर्वशी ने अपने सोशल मीडिया पर इसकी एक झलक साझा की और गाने के लिए अपने सहयोगी की आधिकारिक घोषणा की।

उर्वशी के साथ काम करने पर जेसन डेरुलो ने कहा कि जानू में उर्वशी रौतेला के साथ काम करना एक खुशी है। वह भारतीय सुंदरता का एक चमकदार उदाहरण हैं और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उर्वशी रौतेला दुनिया की दूसरी सबसे खूबसूरत औरत भी हैं।

वह एक उत्कृष्ट अभिनेता और कलाकार हैं। वह परम वैश्विक आइकन हैं। शाहरुख खान के बाद बॉलीवुड की एकमात्र फिल्म व्यक्ति जिसे मैं जानता हूं, वह उर्वशी रौतेला हैं। वह बहुत प्रसिद्ध हैं। मैं उद्योग पर टिप्पणी नहीं कर सकता, लेकिन मुझे भावनाएं और नृत्य पसंद है, जिसमें भारतीय फिल्में शामिल हैं।

वर्कफ्रंट की बात करें तो उर्वशी जियो स्टूडियोज की वेब सीरीज इंस्पेक्टर अविनाश में रणदीप हुड्डा के साथ लीड रोल में नजर आएंगी। अभिनेत्री द्विभाषी थ्रिलर ब्लैक रोज में थिरुट्टू पायल 2 के हिंदी रीमेक के साथ मुख्य भूमिका निभाने जा रही हैं। इसके अलावा, अभिनेत्री सरवना के साथ 200 करोड़ रुपये के बड़े बजट की फिल्म द लीजेंड के साथ तमिल में अपनी शुरूआत करेंगी।

परीक्षाओं को देखते हुए बच्चों की खान–पान सामग्री में करें बदलाव, तरोताजा होगा दिमाग

परीक्षाओं का समय आ गया है। आज से बोर्ड की परीक्षाएँ शुरू हो चुकी हैं। परीक्षाओं के कारण बच्चों का ध्यान अपने खान पान से हटकर सिर्फ परीक्षा को उत्तीर्ण करने की ओर चला जाता है। बच्चे पढ़ाई में इतने गुम हो जाते हैं कि खाने–पीने का ध्यान ही नहीं रहता, जिसका परिणाम कभी–कभी उन्हें परीक्षा के दौरान ही भुगतना पड़ जाता है। मन लगाकर ज्यादा देर तक पढ़ाई करने के लिए बच्चों के लिए एक अच्छी डाइट बेहद जरूरी है।

आज हम अपने पाठकों को बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए कुछ ऐसे आहार बताने जा रहे हैं जिनको उनकी डाइट में शामिल करने से न सिर्फ उनका दिमाग तेज होगा अपितु वे स्वस्थ रहते हुए अपनी परीक्षा दे सकेंगे।

हैवी नाश्ते से करें शुरूआतः दिन की शुरुआत भारी और स्वस्थ नाश्ते के साथ करें। आप बच्चों के नाश्ते में जई, मुसेली, उपमा, खिचड़ी, इडली और ग्लूकोज को शामिल कर सकते है, ये सभी कम ग्लाइसेमिक का विकल्प हैं।

दें दूध और बादाम, बाहर के खाने से मना

दूध पीना हमेशा से फायदेमंद रहा है। दूध में विटामिन कैल्शियम, मैग्निशियम और पोटैशियम की मात्रा पाई जाती है। यह सभी पोषक तत्व याद्दाश्त बढ़ाने में मदद करते हैं। तेज मेमोरी के लिए रात में बादाम भिगोकर रखें और रोजाना सुबह बादाम का सेवन करें। आप चाहें तो बादाम के साथ अंजीर भी भिगोकर रख सकते हैं। साथ ही, परीक्षा के दौरान बच्चों को बाहर का खाना खाने ना दें। इससे बच्चों में संक्रमण होने का खतरा बढ़ सकता है। जितना संभव हो सके बाहर के खाने से बचें। कोशिश करें कि रेस्तरां का खाना ना खाएं।

चाय कॉफी के स्थान पर दें मछली, गाजर

अधिक कैफीन वाली चीजों से बच्चों को दूर रखे। परीक्षा के दौरान बच्चे बहुत ज्यादा कॉफी, चाय और कोला पीना चाहते हैं, लेकिन उन्हें ऐसी चीजें देने से बचें, जिसमें कैफीन हो। उनके खाने में विटामिन को शामिल करें। परीक्षा के तनावपूर्ण समय के दौरान पानी में घुलनशील कुछ विटामिन जैसे विटामिन बी कॉम्प्लेक्स और सी शरीर के लिए आवश्यक होते है। ये मूल रूप से हमें तनाव से लडने में मदद करते हैं। ब्राउन चावल, मेवा, ताजा सब्जियों और फलों का सेवन करें। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ दें। अंडे, मछली, गाजर, कद्दू, हरी पत्तेदार सब्जियां, ताजे फल विटामिन ए, सी और ई की कमी को पूरा करते हैं, साथ ही, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करते हैं और परीक्षा के दौरान बच्चों को बीमार नहीं पडने देते।

एक साथ नहीं अपितु थोड़ा–थोड़ा दें: एक साथ खिलाने की बजह आप बच्चों को थोड़ी–थोड़ी मात्रा में कुछ–कुछ खाने को दें। उन्हें थोड़ी–थोड़ी मात्रा में पौष्टिक आहार दें, ये उन्हें सतर्क और चुस्त रखेगा। भारी मात्रा में भोजन करने से बच्चों को नींद और सुस्ती आ सकती है। पौष्टिक आहार में ताजे फल, सूखे मेवे, शहद, सूप और सलाद आदि बेहतर विकल्प हैं।

जरूर खिलाएँ मछलीः बच्चे की मेमोरी शार्प करने के लिए आप बच्चे को मछली खिलाएं। मछली में मुख्य रूप से ओमेगा–3 फैटी एसिड पाया जाता है, जो स्मृति बढ़ाने में मदद करता है। अगर बच्चा मछली नहीं खाता है तो अलसी के बीज, कद्दू के बीज, तिल के बीज और सोयाबीन दें।

जूस पिलायें

खाने में हाइड्रेटेड के स्त्रोतों को शामिल करें। बच्चों को ताजा फलों के रस, छाछ या नींबू पानी या नींबू का रस और ग्रीन टी दें। दें प्रोटीन वाली खाद्य सामग्री

प्रोटीन ऊर्जा का एक अच्छा और स्रोत है। इसलिए खाने में प्रोटीन के स्रोत जैसे– अंडा, पोहा, इडली, डोसा, ढोकला आदि शामिल करें। ये रक्त और मस्तिष्क में टाइरोसीन (एमिनो एसिड) को बढ़ाता है, ये तंत्रिका कोशिकाओं के निर्माण में भी मदद करता है। साथ ही, बच्चों को सतर्क और सक्रिय बनाए रखने में भी सहायक है।

जंक फूड और चॉकलेट से बनाएं दूरीः बच्चे को बहुत अधि ाक चीनी और मीठी चीजे ना दें। चॉकलेट, कुकीज आदि रक्त में शर्करा के स्तर को बढ़ा सकते है। ऐसे में पेट खाली सा लगता है और जल्दी–जल्दी भूख लगने लगती है। बच्चे को जंक फूड का भी सेवन नहीं करने दे।